मरकुस

यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत

1 यह अल्लाह के फ़रज़ंद ईसा मसीह के बारे में खुशख़बरी है,

2 जो यसायाह नबी की पेशगोई के मुताबिक़ यों शुरू हुई :

‘देख, मैं अपने पैग़ंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ

जो तेरे लिए रास्ता तैयार करेगा।

3 रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,

रब की राह तैयार करो!

उसके रास्ते सीधे बनाओ।’

4 यह पैग़ंबर यहया बपतिस्मा देनेवाला था। रेगिस्तान में रहकर उसने एलान किया कि लोग तौबा करके बपतिस्मा लें ताकि उन्हें अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाए।

5 यहदिया के पूरे इलाके के लोग यस्शलम के तमाम बाशिंदों समेत निकलकर उसके पास आए। और अपने गुनाहों को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा लिया।

6 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। खुराक के तौर पर वह टिट्टियाँ और जंगली शहद खाता था।

7 उसने एलान किया, “मेरे बाद एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं झुककर उसके जूतों के तसमे खोलने के भी लायक़ नहीं।

8 मैं तुमको पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें रूहुल-कुद्स से बपतिस्मा देगा।”

ईसा का बपतिस्मा और आजमाइश

9 उन दिनों में ईसा नासरत से आया और यहया ने उसे दरियाए-यरदन में बपतिस्मा दिया।

10 पानी से निकलते ही ईसा ने देखा कि आसमान फट रहा है और रूहुल-कुद्स कबूतर की तरह मुझ पर उतर रहा है।

11 साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं खुश हूँ।”

12 इसके फ़ौरन बाद रूहुल-कुदूस ने उसे रेगिस्तान में भेज दिया।

13 वहाँ वह चालीस दिन रहा जिसके दौरान इबलीस उस की आजमाइश करता रहा। वह जंगली जानवरों के दरमियान रहता और फ़रिश्ते उस की खिदमत करते थे।

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

14 जब यहया को जेल में डाल दिया गया तो ईसा गलील के इलाके में आया और अल्लाह की खुशाखबरी का एलान करने लगा।

15 वह बोला, “मुकर्ररा वक़्त आ गया है, अल्लाह की बादशाही करीब आ गई है। तौबा करो और अल्लाह की खुशाखबरी पर ईमान लाओ।”

16 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे किनारे चल रहा था तो उसने शमौन और उसके भाई अंदरियास को देखा। वह झील में जाल डाल रहे थे क्योंकि वह माहीगीर थे।

17 उसने कहा, “आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।”

18 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

19 थोड़ा-सा आगे जाकर ईसा ने जबदी के बेटों याकूब और यूहन्ना को देखा। वह कश्ती में बैठे अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे।

20 उसने उन्हें फ़ौरन बुलाया तो वह अपने बाप को मज़दूरों समेत कश्ती में छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

आदमी की बदरूह के कब्ज़े से रिहाई

21 वह कफ़र्नहम शहर में दाखिल हुए। और सबत के दिन ईसा इबादतख़ाने में जाकर लोगों को सिखाने लगा।

22 वह उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए क्योंकि वह उन्हें शरीअत के आलिमों की तरह नहीं बल्कि इख्तियार के साथ सिखाता था।

23 उनके इबादतख़ाने में एक आदमी था जो किसी नापाक रूह के कब्ज़े में था। ईसा को देखते ही वह चीख चीखकर बोलने लगा,

24 “ऐ नासरत के ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप अल्लाह के कुदूस हैं।”

25 ईसा ने उसे डाँटकर कहा, “खामोश! आदमी से निकल जा!”

26 इस पर बदरूह आदमी को झँझोड़कर और चीखें मार मारकर उसमें से निकल गई।

27 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने लगे, “यह क्या है? एक नई तालीम जो इस्त्रियार के साथ दी जा रही है। और वह बदरूहों को हुक्म देता है तो वह उस की मानती है।”

28 और ईसा के बारे में चर्चा जल्दी से गलील के पूरे इलाके में फैल गया।

बहुत-से मरीजों की शफा

29 इबादतखाने से निकलने के ऐन बाद वह याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अंदरियास के घर गए।

30 वहाँ शमौन की सास बिस्तर पर पड़ी थी, क्योंकि उसे बुखार था। उन्होंने ईसा को बता दिया

31 तो वह उसके नज़दीक गया। उसका हाथ पकड़कर उसने उठने में उस की मदद की। इस पर बुखार उतर गया और वह उनकी खिदमत करने लगी।

32 जब शाम हुई और सूरज गुरूब हुआ तो लोग तमाम मरीजों और बदरूह-गिरिफ्ता अशखास को ईसा के पास लाए।

33 पूरा शहर दरवाज़े पर जमा हो गया

34 और ईसा ने बहुत-से मरीजों को मुख्तलिफ़ किस्म की बीमारियों से शफा दी। उसने बहुत-सी बदरूहें भी निकाल दीं, लेकिन उसने उन्हें बोलने न दिया, क्योंकि वह जानती थी कि वह कौन है।

गलील में मुनादी

35 अगले दिन सुबह-सवेरे जब अभी अंधेरा ही था तो ईसा उठकर दुआ करने के लिए किसी वीरान जगह चला गया।

36 बाद में शमौन और उसके साथी उसे ढूँढने निकले।

37 जब मालूम हुआ कि वह कहाँ है तो उन्होंने उससे कहा, “तमाम लोग आपको तलाश कर रहे हैं।”

38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “आओ, हम साथवाली आबादियों में जाएँ ताकि मैं वहाँ भी मुनादी करूँ। क्योंकि मैं इसी मकसद से निकल आया हूँ।”

39 चुनौचे वह पूरे गलील में से गुज़रता हुआ इबादतखानों में मुनादी करता और बदरूहों को निकालता रहा।

कोढ से शफा

40 एक आदमी ईसा के पास आया जो कोढ का मरीज़ था। घुटनों के बल झुककर उसने मिन्नत की, “अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।”

41 ईसा को तरस आया। उसने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, पाक-साफ़ हो जा।”

42 इस पर बीमारी फ़ौरन दूर हो गई और वह पाक-साफ़ हो गया।

43 ईसा ने उसे फ़ौरन सख़्त करके सख़्ती से समझाया,

44 “ख़बरदार! यह बात किसी को न बताना बल्कि बैतुल-मुक़द्दस में इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह कुरबानी ले जा जिसका तकाज़ा मूसा की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ से शफ़ा मिली हो। यों अलानिया तसदीक़ हो जाएगी कि तू वाक़ई पाक-साफ़ हो गया है।”

45 आदमी चला गया, लेकिन वह हर जगह अपनी कहानी सुनाने लगा। उसने यह ख़बर इतनी फैलाई कि ईसा खुले तौर पर किसी भी शहर में दाख़िल न हो सका बल्कि उसे वीरान जगहों में रहना पड़ा। लेकिन वहाँ भी लोग हर जगह से उसके पास पहुँच गए।

2

मफ़लूज के लिए छत खोली जाती है

1 कुछ दिनों के बाद ईसा कफ़र्नहम में वापस आया। जल्द ही ख़बर फैल गई कि वह घर में है।

2 इस पर इतने लोग जमा हो गए कि पूरा घर भर गया बल्कि दरवाज़े के सामने भी जगह न रही। वह उन्हें कलामे-मुक़द्दस सुनाने लगा।

3 इतने में कुछ लोग पहुँचे। उनमें से चार आदमी एक मफ़लूज को उठाए ईसा के पास लाना चाहते थे।

4 मगर वह उसे हज़ूम की वजह से ईसा तक न पहुँचा सके, इसलिए उन्होंने छत खोल दी। ईसा के ऊपर का हिस्सा उधेड़कर उन्होंने चारपाई को जिस पर मफ़लूज लेटा था उतार दिया।

5 जब ईसा ने उनका ईमान देखा तो उसने मफ़लूज से कहा, “बेटा, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”

6 शरीअत के कुछ आलिम वहाँ बैठे थे। वह यह सुनकर सोच-बिचार में पड़ गए।

7 “यह किस तरह ऐसी बातें कर सकता है? कुफर बक रहा है। सिर्फ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।”

8 ईसा ने अपनी रूह में फ़ौरन जान लिया कि वह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, “तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों सोच रहे हो?”

9 क्या मफ़लूज से यह कहना आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ, अपनी चारपाई उठाकर चल-फिर’?

10 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाकई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है।” यह कहकर वह मफ़लूज से मुखातिब हुआ,

11 “मैं तुझसे कहता हूँ कि उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”

12 वह आदमी खड़ा हुआ और फ़ौरन अपनी चारपाई उठाकर उनके देखते देखते चला गया। सब सख्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तमज़ीद करके कहने लगे, “ऐसा काम हमने कभी नहीं देखा।”

ईसा मन्ती को बुलाता है

13 फिर ईसा निकलकर दुबारा झील के किनारे गया। एक बड़ी भीड़ उसके पास आई तो वह उन्हें सिखाने लगा।

14 चलते चलते उसने हलफ़ई के बेटे लावी को देखा जो टैक्स लेने के लिए अपनी चौकी पर बैठा था। ईसा ने उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” और लावी उठकर उसके पीछे हो लिया।

15 बाद में ईसा लावी के घर में खाना खा रहा था। उसके साथ न सिर्फ़ उसके शागिर्द बल्कि बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी थे, क्योंकि उनमें से बहुतेरे उसके पैरोकार बन चुके थे।

16 शरीअत के कुछ फ़रीसी आलिमों ने उसे यों टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ खाते देखा तो उसके शागिर्दों से पूछा, “यह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?”

17 यह सुनकर ईसा ने जवाब दिया, “सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”

शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

18 यहया के शागिर्द और फ़रीसी रोज़ा रखा करते थे। एक मौके पर कुछ लोग ईसा के पास आए और पूछा, “आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते जबकि यहया और फ़रीसियों के शागिर्द रोज़ा रखते हैं?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “शादी के मेहमान किस तरह रोज़ा रख सकते हैं जब दूल्हा उनके दरमियान है? जब तक दूल्हा उनके साथ है वह रोज़ा नहीं रख सकते।

20 लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

21 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले की निसबत ज़्यादा ख़राब हो जाएगी।

22 इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डालता। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मै और मशकें दोनों ज़ाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं।”

सबत के बारे में सवाल

23 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुज़र रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द खाने के लिए अनाज की बालें तोड़ने लगे। सबत का दिन था।

24 यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “देखो, यह क्यों ऐसा कर रहे हैं? सबत के दिन ऐसा करना मना है।”

25 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी और उनके पास ख़ुराक नहीं थी?”

26 उस वक़्त अबियातर इमामे-आज़म था। दाऊद अल्लाह के घर में दाखिल हुआ और रब के लिए मखसूसशदा रोटियाँ लेकर खाई, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उसने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाई।”

27 फिर उसने कहा, “इनसान को सबत के दिन के लिए नहीं बनाया गया बल्कि सबत का दिन इनसान के लिए।

28 चुनाँचे इब्ने-आदम सबत का भी मालिक है।”

3

सूखे हुए हाथ की शफ़ा

1 किसी और वक्रत जब ईसा इबादतखाने में गया तो वहाँ एक आदमी था जिसका हाथ सूखा हुआ था।

2 सबत का दिन था और लोग बड़े गौर से देख रहे थे कि क्या ईसा उस आदमी को आज भी शफ़ा देगा। क्योंकि वह इस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे।

3 ईसा ने सूखे हाथवाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।”

4 फिर ईसा ने उनसे पूछा, “मुझे बताओ, शरीरत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या ग़लत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?”

सब खामोश रहे।

5 वह गुस्से से अपने इर्दगिर्द के लोगों की तरफ़ देखने लगा। उनकी सख़्तदिली उसके लिए बड़े दुख का बाइस बन रही थी। फिर उसने आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया।

6 इस पर फ़रीसी बाहर निकलकर सीधे हेरोदेस की पार्टी के अफ़राद के साथ मिलकर ईसा को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे।

झील के किनारे पर हुज़ूम

7 लेकिन ईसा वहाँ से हटकर अपने शागिर्दों के साथ झील के पास गया। एक बड़ा हुज़ूम उसके पीछे हो लिया। लोग न सिर्फ़ गलील के इलाक़े से आए बल्कि बहुत-सी और जगहों यानी यहूदिया,

8 यरूशलम, इदमया, दरियाए-यरदन के पार और सू और सैदा के इलाक़े से भी। वजह यह थी कि ईसा के काम की ख़बर उन इलाकों तक भी पहुँच चुकी थी और नतीजे में बहुत-से लोग वहाँ से भी आए।

9 ईसा ने शागिर्दों से कहा, “एहतियातन एक कश्ती उस वक्रत के लिए तैयार कर रखो जब हुज़ूम मुझे हद से ज़्यादा दबाने लगेगा।”

10 क्योंकि उस दिन उसने बहुतों को शफ़ा दी थी, इसलिए जिसे भी कोई तकलीफ़ थी वह धक्के दे देकर उसके पास आया ताकि उसे छू सके।

11 और जब भी नापाक रूहों ने ईसा को देखा तो वह उसके सामने गिरकर चीखें मारने लगीं, “आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं।”

12 लेकिन ईसा ने उन्हें सख़्ती से डाँटकर कहा कि वह उसे जाहिर न करें।

ईसा बारह रसूलों को मुकर्रर करता है

13 इसके बाद ईसा ने पहाड़ पर चढ़कर जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुला लिया। और वह उसके पास आए।

14 उसने उनमें से बारह को चुन लिया। उन्हें उसने अपने रसूल मुकर्रर कर लिया ताकि वह उसके साथ चलें और वह उन्हें मुनादी करने के लिए भेज सके।

15 उसने उन्हें बदरूहें निकालने का इख्तियार भी दिया।

16 जिन बारह को उसने मुकर्रर किया उनके नाम यह हैं : शमौन जिसका लकब उसने पतरस रखा,

17 ज़बदी के बेटे याकूब और यूहन्ना जिनका लकब ईसा ने 'बादल की गरज के बेटे' रखा,

18 अंदरियास, फ़िलिप्पुस, बरतुलमाई, मर्ती, तोमा, याकूब बिन हलफ़ई, तद्दी, शमौन मुजाहिद

19 और यहदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

ईसा और बदरूहों का सरदार

20 फिर ईसा किसी घर में दाखिल हुआ। इस बार भी इतना हुजूम जमा हो गया कि ईसा को अपने शागिर्दों समेत खाना खाने का मौक़ा भी न मिला।

21 जब उसके खानदान के अफ़राद ने यह सुना तो वह उसे पकड़कर ले जाने के लिए आए, क्योंकि उन्होंने कहा, "वह होश में नहीं है।"

22 लेकिन शरीअत के जो आलिम यरूशलम से आए थे उन्होंने कहा, "यह बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल के कब्ज़े में है। उसी की मदद से बदरूहों को निकाल रहा है।"

23 फिर ईसा ने उन्हें अपने पास बुलाकर तमसीलों में जवाब दिया। "इबलीस किस तरह इबलीस को निकाल सकता है?"

24 जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह कायम नहीं रह सकती।

25 और जिस घराने की ऐसी हालत हो वह भी कायम नहीं रह सकता।

26 इसी तरह अगर इबलीस अपने आपकी मुखालफ़त करे और यों उसमें फूट पड़ जाए तो वह कायम नहीं रह सकता बल्कि खत्म हो चुका है।

27 किसी जोरावर आदमी के घर में घुसकर उसका मालो-असबाब लूटना उस वक़्त तक मुमकिन नहीं है जब तक उस आदमी को बाँधा न जाए। फिर ही उसे लूटा जा सकता है।

28 मैं तुमसे सच कहता हूँ कि लोगों के तमाम गुनाह और कुफ़र की बातें मुआफ़ की जा सकेंगी, खाह वह कितना ही कुफ़र क्यों न बकें।

29 लेकिन जो रूहल-कुदूस के खिलाफ़ कुफ़र बके उसे अबद तक मुआफ़ी नहीं मिलेगी। वह एक अबदी गुनाह का कुसूरवार ठहरेगा।”

30 ईसा ने यह इसलिए कहा क्योंकि आलिम कह रहे थे कि वह किसी बदरूह की गिरफ़्त में है।

ईसा की माँ और भाई

31 फिर ईसा की माँ और भाई पहुँच गए। बाहर खड़े होकर उन्होंने किसी को उसे बुलाने को भेज दिया।

32 उसके इर्दगिर्द हुजूम बैठा था। उन्होंने कहा, “आपकी माँ और भाई बाहर आपको बुला रहे हैं।”

33 ईसा ने पूछा, “कौन मेरी माँ और कौन मेरे भाई हैं?”

34 और अपने गिर्द बैठे लोगों पर नज़र डालकर उसने कहा, “देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई हैं।

35 जो भी अल्लाह की मरज़ी पूरी करता है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।”

4

बीज बोनेवाले की तमसील

1 फिर ईसा दुबारा झील के किनारे तालीम देने लगा। और इतनी बड़ी भीड़ उसके पास जमा हुई कि वह झील में खड़ी एक कश्ती में बैठ गया। बाक़ी लोग झील के किनारे पर खड़े रहे।

2 उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में सिखाईं। उनमें से एक यह थी :

3 “सुनो! एक किसान बीज बोने के लिए निकला।

4 जब बीज इधर-उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे और परिदों ने आकर उन्हें चुग लिया।

5 कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं थी।

6 लेकिन जब सर्ज निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इसलिए सूख गए।

7 कुछ दाने खुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन खुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने फूलने की जगह न दी। चुनाँचे वह भी खत्म हो गए और फल न ला सके।

8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो ज़रखेज़ ज़मीन में गिरे। वहाँ वह फूट निकले और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाए।”

9 फिर उसने कहा, “जो सुन सकता है वह सुन ले!”

तमसीलों का मरकुसद

10 जब वह अकेला था तो जो लोग उसके इर्दगिर्द जमा थे उन्होंने बारह शागिर्दों समेत उससे पूछा कि इस तमसील का क्या मतलब है?

11 उसने जवाब दिया, “तुमको तो अल्लाह की बादशाही का भेद समझने की लियाक़त दी गई है। लेकिन मैं इस दायरे से बाहर के लोगों को हर बात समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता हूँ

12 ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि

‘वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे,
वह अपने कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं समझेंगे,
ऐसा न हो कि वह मेरी तरफ़ रूजू करें
और उन्हें मुआफ़ कर दिया जाए’।”

बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

13 फिर ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुम यह तमसील नहीं समझते? तो फिर बाक़ी तमाम तमसीलें किस तरह समझ पाओगे?”

14 बीज बोनेवाला अल्लाह का कलाम बो देता है।

15 रास्ते पर गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम को सुनते तो हैं, लेकिन फिर इबलीस फ़ौरन आकर वह कलाम छीन लेता है जो उनमें बोया गया है।

16 पथरीली ज़मीन पर गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे खुशी से कबूल तो कर लेते हैं,

17 लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते और इसलिए ज्यादा देर तक कायम नहीं रहते। ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस किसी मुसीबत या ईज़ारसानी से दोचार हो जाएँ, तो वह बरग़स्ता हो जाते हैं।

18 खुदरौ काँटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं,

19 लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ, दौलत का फ़रेब और दीगर चीज़ों का लालच कलाम को फलने फूलने नहीं देते। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता।

20 इसके मुकाबले में ज़रखेज़ ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनकर उसे कबूल करते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।”

कोई चराग को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

21 ईसा ने बात जारी रखी और कहा, “क्या चराग को इसलिए जलाकर लाया जाता है कि वह किसी बरतन या चारपाई के नीचे रखा जाए? हरगिज़ नहीं! उसे शमादान पर रखा जाता है।

22 क्योंकि जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसे आखिरकार जाहिर हो जाना है और तमाम भेदों को एक दिन खुल जाना है।

23 अगर कोई सुन सके तो सुन ले।”

24 उसने उनसे यह भी कहा, “इस पर ध्यान दो कि तुम क्या सुनते हो। जिस हिसाब से तुम दूसरों को देते हो उसी हिसाब से तुमको भी दिया जाएगा बल्कि तुमको उससे बढ़कर मिलेगा।

25 क्योंकि जिसे कुछ हासिल हुआ है उसे और भी दिया जाएगा, जबकि जिसे कुछ हासिल नहीं हुआ उससे वह थोड़ा-बहुत भी छीन लिया जाएगा जो उसे हासिल है।”

ख़ुद बख़ुद उगनेवाले बीज की तमसील

26 फिर ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही यों समझ लो : एक किसान ज़मीन में बीज बिखेर देता है।

27 यह बीज फूटकर दिन-रात उगता रहता है, खाह किसान सो रहा या जाग रहा हो। उसे मालूम नहीं कि यह क्योंकर होता है।

28 ज़मीन ख़ुद बख़ुद अनाज की फ़सल पैदा करती है। पहले पत्ते निकलते हैं, फिर बालें नज़र आने लगती हैं और आखिर में दाने पैदा हो जाते हैं।

29 और ज्योंही अनाज की फ़सल पक जाती है किसान आकर दर्राँती से उसे काट लेता है, क्योंकि फ़सल की कटाई का वक़्त आ चुका होता है।”

राई के दाने की तमसील

30 फिर ईसा ने कहा, “हम अल्लाह की बादशाही का मुवाज़ना किस चीज़ से करें? या हम कौन-सी तमसील से इसे बयान करें?”

31 वह राई के दाने की मानिंद है जो ज़मीन में डाला गया हो। राई बीजों में सबसे छोटा दाना है

32 लेकिन बढ़ते बढ़ते सब्ज़ियों में सबसे बड़ा हो जाता है। उस की शाखें इतनी लंबी हो जाती हैं कि परिदे उसके साये में अपने घोंसले बना सकते हैं।”

33 ईसा इसी किस्म की बहुत-सी तमसीलों की मदद से उन्हें कलाम यों सुनाता था कि वह इसे समझ सकते थे।

34 हाँ, अवाम को वह सिर्फ तमसीलों के ज़रीए सिखाता था। लेकिन जब वह अपने शागिर्दों के साथ अकेला होता तो वह हर बात की तशरीह करता था।

ईसा आँधी को थमा देता है

35 उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “आओ, हम झील के पार चलें।”

36 चुनौचे वह भीड़ को सखसत करके उसे लेकर चल पड़े। बाज़ और कश्तियाँ भी साथ गईं।

37 अचानक सख्त आँधी आई। लहरें कश्ती से टकराकर उसे पानी से भरने लगीं,

38 लेकिन ईसा अभी तक कश्ती के पिछले हिस्से में अपना सर गद्दी पर रखे सो रहा था। शागिर्दों ने उसे जगाकर कहा, “उस्ताद, क्या आपको परवा नहीं कि हम तबाह हो रहे हैं?”

39 वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से कहा, “खामोश! चुप कर!” इस पर आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं।

40 फिर ईसा ने शागिर्दों से पूछा, “तुम क्यों घबराते हो? क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?”

41 उन पर सख्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह एक दूसरे से कहने लगे, “आखिर यह कौन है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।”

5

ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

1 फिर वह झील के पार गरासा के इलाके में पहुँचे।

2 जब ईसा कश्ती से उतरा तो एक आदमी जो नापाक रूह की गिरिफ्त में था कब्रों में से निकलकर ईसा को मिला।

3 यह आदमी कब्रों में रहता और इस नौबत तक पहुँच गया था कि कोई भी उसे बाँध न सकता था, चाहे उसे जंजीरों से भी बाँधा जाता।

4 उसे बहुत दफा बेड़ियों और जंजीरों से बाँधा गया था, लेकिन जब भी ऐसा हुआ तो उसने जंजीरों को तोड़कर बेड़ियों को टुकड़े टुकड़े कर दिया था। कोई भी उसे कंट्रोल नहीं कर सकता था।

5 दिन-रात वह चीखें मार मारकर कब्रों और पहाड़ी इलाके में घुमता-फिरता और अपने आपको पत्थरों से ज़खमी कर लेता था।

6 ईसा को दूर से देखकर वह दौड़ा और उसके सामने मुँह के बल गिरा।

7 वह ज़ोर से चीखा, “ऐ ईसा अल्लाह तआला के फ़रज़ंद, मेरा आपके साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आपको कसम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न डालें!”

8 क्योंकि ईसा ने उसे कहा था, “ऐ नापाक रूह, आदमी में से निकल जा!”

9 फिर ईसा ने पूछा, “तेरा नाम क्या है?”

उसने जवाब दिया, “लशकर, क्योंकि हम बहुत-से हैं।”

10 और वह बार बार मिन्नत करता रहा कि ईसा उन्हें इस इलाके से न निकाले।

11 उस वक़्त करीब की पहाड़ी पर सुअरों का बड़ा गोल चर रहा था।

12 बदरूहों ने ईसा से इलतमास की, “हमें सुअरों में भेज दें, हमें उनमें दाख़िल होने दें।”

13 उसने उन्हें इजाज़त दी तो बदरूहें उस आदमी में से निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे गोल के तक़रीबन 2,000 सुअर भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपटकर डूब मरे।

14 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया तो लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए।

15 उसके पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिसमें पहले बदरूहों का लशकर था। अब वह कपड़े पहने वहाँ बैठा था और उस की ज़हनी हालत ठीक थी। यह देखकर वह डर गए।

16 जिन्होंने सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों को बताया कि बदरूह-गिरिफ़्त आदमी और सुअरों के साथ क्या हुआ है।

17 फिर लोग ईसा की मिन्नत करने लगे कि वह उनके इलाके से चला जाए।

18 ईसा कश्ती पर सवार होने लगा तो बदरूहों से आज्ञाद किए गए आदमी ने उससे इलतमास की, “मुझे भी अपने साथ जाने दें।”

19 लेकिन ईसा ने उसे साथ जाने न दिया बल्कि कहा, “अपने घर वापस चला जा और अपने अजीजों को सब कुछ बता जो रब ने तेरे लिए किया है, कि उसने तुझ पर कितना रहम किया है।”

20 चुनौचे आदमी चला गया और दिकपुलिस के इलाके में लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया है। और सब हैरतजदा हुए।

याईर की बेटी और बीमार औरत

21 ईसा ने कश्ती में बैठे झील को दुबारा पार किया। जब दूसरे किनारे पहुँचा तो एक हजूम उसके गिर्द जमा हो गया। वह अभी झील के पास ही था

22 कि मक्कामी इबादतखाने का एक राहनुमा उसके पास आया। उसका नाम याईर था। ईसा को देखकर वह उसके पाँवों में गिर गया

23 और बहुत मिन्नत करने लगा, “मेरी छोटी बेटी मरनेवाली है, बराहे-करम आकर उस पर अपने हाथ रखें ताकि वह शफा पाकर जिंदा रहे।”

24 चुनौचे ईसा उसके साथ चल पड़ा। एक बड़ी भीड़ उसके पीछे लग गई और लोग उसे घेरकर हर तरफ से दबाने लगे।

25 हजूम में एक औरत थी जो बारह साल से खून बहने के मरज से रिहाई न पा सकी थी।

26 बहुत डाक्टरों से अपना इलाज करवा करवा कर उसे कई तरह की मुसीबत झेलनी पड़ी थी और इतने में उसके तमाम पैसे भी खर्च हो गए थे। तो भी कोई फायदा न हुआ था बल्कि उस की हालत मज्जीद खराब होती गई।

27 ईसा के बारे में सुनकर वह भीड़ में शामिल हो गई थी। अब पीछे से आकर उसने उसके लिबास को छुआ,

28 क्योंकि उसने सोचा, “अगर मैं सिर्फ उसके लिबास को ही छू लूँ तो मैं शफा पा लूँगी।”

29 खून बहना फौरन बंद हो गया और उसने अपने जिस्म में महसूस किया कि मुझे इस अजियतनाक हालत से रिहाई मिल गई है।

30 लेकिन उसी लमहे ईसा को खूद महसूस हुआ कि मुझमें से तवानाई निकली है। उसने मुड़कर पूछा, “किसने मेरे कपड़ों को छुआ है?”

31 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “आप खुद देख रहे हैं कि हुजूम आपको घेरकर दबा रहा है। तो फिर आप किस तरह पूछ सकते हैं कि किसने मुझे छुआ?”

32 लेकिन ईसा अपने चारों तरफ़ देखता रहा कि किसने यह किया है।

33 इस पर वह औरत यह जानकर कि मेरे साथ क्या हुआ है ख़ौफ़ के मारे लरज़ती हुई उसके पास आई। वह उसके सामने गिर पड़ी और उसे पूरी हक़ीक़त खोलकर बयान की।

34 ईसा ने उससे कहा, “बेटी, तेरे इमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से जा और अपनी अज़ियतनाक हालत से बची रह।”

35 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर की तरफ़ से कुछ लोग पहुँचे और कहा, “आपकी बेटी फ़ौत हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ़ देने की क्या ज़रूरत?”

36 उनकी यह बात नज़रंदाज़ करके ईसा ने याईर से कहा, “मत घबराओ, फ़क़त इमान रखो।”

37 फिर ईसा ने हुजूम को रोक लिया और सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने साथ जाने की इजाज़त दी।

38 जब इबादतख़ाने के राहनुमा के घर पहुँचे तो वहाँ बड़ी अफ़रा-तफ़री नज़र आई। लोग ख़ूब गिर्याओ-ज़ारी कर रहे थे।

39 अंदर जाकर ईसा ने उनसे कहा, “यह कैसा शोर-शराबा है? क्यों रो रहे हो? लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।”

40 लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे। लेकिन उसने सबको बाहर निकाल दिया। फिर सिर्फ़ लड़की के वालिदैन और अपने तीन शागिर्दों को साथ लेकर वह उस कमरे में दाख़िल हुआ जिसमें लड़की पड़ी थी।

41 उसने उसका हाथ पकड़कर कहा, “तलिथा कूम!” इसका मतलब है, “छोटी लड़की, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि जाग उठ!”

42 लड़की फ़ौरन उठकर चलने-फिरने लगी। उस की उम्र बारह साल थी। यह देखकर लोग घबराकर हैरान रह गए।

43 ईसा ने उन्हें संजीदगी से समझाया कि वह किसी को भी इसके बारे में न बताएँ। फिर उसने उन्हें कहा कि उसे ख़ाने को कुछ दो।

6

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

1 फिर ईसा वहाँ से चला गया और अपने वतनी शहर नासरत में आया। उसके शागिर्द उसके साथ थे।

2 सबत के दिन वह इबादतखाने में तालीम देने लगा। बेशतर लोग उस की बातें सुनकर हैरतजदा हुए। उन्होंने पूछा, “इसे यह कहाँ से हासिल हुआ है? यह हिकमत जो इसे मिली है, और यह मोजिजे जो इसके हाथों से होते हैं, यह क्या है?”

3 क्या यह वह बढई नहीं है जो मरियम का बेटा है और जिसके भाई याकूब, यूसुफ, यहदाह और शमौन हैं? और क्या इसकी बहनें यहीं नहीं रहती?” यों उन्होंने उससे ठोकर खाकर उसे कबूल न किया।

4 ईसा ने उनसे कहा, “नबी की हर जगह इज्जत होती है सिवाए उसके वतनी शहर, उसके रिश्तेदारों और उसके अपने खानदान के।”

5 वहाँ वह कोई मोजिजा न कर सका। उसने सिर्फ चंद एक मरीजों पर हाथ रखकर उनको शफा दी।

6 और वह उनकी बेएतकादी के सबब से बहुत हैरान था।

ईसा बारह शागिर्दों को तबलीग करने भेजता है

इसके बाद ईसा ने इर्दगिर्द के इलाके में गाँव गाँव जाकर लोगों को तालीम दी।

7 बारह शागिर्दों को बुलाकर वह उन्हें दो दो करके मुख्तलिफ जगहों पर भेजने लगा। इसके लिए उसने उन्हें नापाक रूहों को निकालने का इख्तियार देकर

8 यह हिदायत की, “सफर पर अपने साथ कुछ न लेना सिवाए एक लाठी के। न रोटी, न सामान के लिए कोई बैग, न कमरबंद में कोई पैसा,

9 न एक से ज़्यादा सूट। तुम जूते पहन सकते हो।

10 जिस घर में भी दाखिल हो उसमें उस मक़ाम से चले जाने तक ठहरो।

11 और अगर कोई मक़ाम तुमको कबूल न करे या तुम्हारी न सुने तो फिर रवाना होते वक़्त अपने पाँवों से गर्द झाड़ दो। यों तुम उनके खिलाफ़ गवाही दोगे।”

12 चुनाँचे शागिर्द वहाँ से निकलकर मुनादी करने लगे कि लोग तौबा करें।

13 उन्होंने बहुत-सी बदरूहें निकाल दीं और बहुत-से मरीजों पर जैतून का तेल मलकर उन्हें शफा दी।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का क़त्ल

14 बादशाह हेरोदेस अंतिपास ने ईसा के बारे में सुना, क्योंकि उसका नाम मशहूर हो गया था। कुछ कह रहे थे, “यहया बपतिस्मा देनेवाला मुरदों में से जी उठा है, इसलिए इस किस्म की मोजिजाना ताकतें उसमें नज़र आती हैं।”

औरों ने सोचा, “यह इलियास नबी है।”

15 यह खयाल भी पेश किया जा रहा था कि वह कदीम ज़माने के नबियों जैसा कोई नबी है।

16 लेकिन जब हेरोदेस ने उसके बारे में सुना तो उसने कहा, “यहया जिसका मैंने सर कलम करवाया है मुरदों में से जी उठा है।”

17 वजह यह थी कि हेरोदेस के हुक्म पर ही यहया को गिरिफ्तार करके जेल में डाला गया था। यह हेरोदियास की खातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई फिलिप्पुस की बीवी थी, लेकिन जिससे उसने अब खुद शादी कर ली थी।

18 यहया ने हेरोदेस को बताया था, “अपने भाई की बीवी से तेरी शादी नाजायज़ है।”

19 इस वजह से हेरोदियास उससे कीना रखती और उसे क़त्ल कराना चाहती थी। लेकिन इसमें वह नाकाम रही

20 क्योंकि हेरोदेस यहया से डरता था। वह जानता था कि यह आदमी रास्तबाज़ और मुक़द्दस है, इसलिए वह उस की हिफ़ाज़त करता था। जब भी उससे बात होती तो हेरोदेस सुन सुनकर बड़ी उलझन में पड़ जाता। तो भी वह उस की बातें सुनना पसंद करता था।

21 आखिरकार हेरोदियास को हेरोदेस की सालगिरह पर अच्छा मौक़ा मिल गया। सालगिरह को मनाने के लिए हेरोदेस ने अपने बड़े सरकारी अफ़सरों, मिल्ट्री कमांडरों और गलील के अब्बल दर्जे के शहरियों की ज़ियाफ़त की।

22 ज़ियाफ़त के दौरान हेरोदियास की बेटी अंदर आकर नाचने लगी। हेरोदेस और उसके मेहमानों को यह बहुत पसंद आया और उसने लड़की से कहा, “जो जी चाहे मुझसे माँग तो मैं वह तुझे दूँगा।”

23 बल्कि उसने क़सम खाकर कहा, “जो भी तू माँगगी मैं तुझे दूँगा, ख़ाह बादशाही का आधा हिस्सा ही क्यों न हो।”

24 लड़की ने निकलकर अपनी माँ से पूछा, “मैं क्या माँगूँ?”

माँ ने जवाब दिया, “यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर।”

25 लड़की फुरती से अंदर जाकर बादशाह के पास वापस आई और कहा, “मैं चाहती हूँ कि आप मुझे अभी अभी यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में मँगवा दें।”

26 यह सुनकर बादशाह को बहुत दुख हुआ। लेकिन अपनी कसमों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह से वह इनकार करने के लिए भी तैयार नहीं था।

27 चुनौचे उसने फ़ौरन जल्लाद को भेजकर हुक्म दिया कि वह यहया का सर ले आए। जल्लाद ने जेल में जाकर यहया का सर कलम कर दिया।

28 फिर वह उसे ट्रे में रखकर ले आया और लड़की को दे दिया। लड़की ने उसे अपनी माँ के सुपुर्द किया।

29 जब यहया के शागिर्दों को यह ख़बर पहुँची तो वह आए और उस की लाश लेकर उसे कब्र में रख दिया।

ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है

30 रसूल वापस आकर ईसा के पास जमा हुए और उसे सब कुछ सुनाने लगे जो उन्होंने किया और सिखाया था।

31 इस दौरान इतने लोग आ और जा रहे थे कि उन्हें खाना खाने का मौक़ा भी न मिला। इसलिए ईसा ने बारह शागिर्दों से कहा, “आओ, हम लोगों से अलग होकर किसी ग़ैरआबाद जगह जाँँ और आराम करें।”

32 चुनौचे वह कश्ती पर सवार होकर किसी वीरान जगह चले गए।

33 लेकिन बहुत-से लोगों ने उन्हें जाते वक़्त पहचान लिया। वह पैदल चलकर तमाम शहरों से निकल आए और दौड़ दौड़कर उनसे पहले मनज़िले-मक़सूद तक पहुँच गए।

34 जब ईसा ने कश्ती पर से उतरकर बड़े हुज़ूम को देखा तो उसे लोगों पर तरस आया, क्योंकि वह उन भेड़ों की मानिंद थे जिनका कोई चरवाहा न हो। वहीं वह उन्हें बहुत-सी बातें सिखाने लगा।

35 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके पास आए और कहा, “यह जगह वीरान है और दिन ढलने लगा है।

36 इनको रखसत कर दें ताकि यह इर्दगिर्द की बस्तियों और देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ खरीद लें।”

37 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, “तुम खुद इन्हें कुछ खाने को दो।”

उन्होंने पूछा, “हम इसके लिए दरकार चाँदी के 200 सिक्के कहाँ से लेकर रोटी खरीदने जाएँ और इन्हें खिलाएँ?”

38 उसने कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाकर पता करो!”

उन्होंने मालूम किया। फिर दुबारा उसके पास आकर कहने लगे, “हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।”

39 इस पर ईसा ने उन्हें हिदायत दी, “तमाम लोगों को गुरोहों में हरी घास पर बिठा दो।”

40 चुनौचे लोग सौ सौ और पचास पचास की सूरत में बैठ गए।

41 फिर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ देखा और शुकुगुजारी की दुआ की। फिर उसने रोटियों को तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया ताकि वह लोगों में तकसीम करें। उसने दो मछलियों को भी टुकड़े टुकड़े करके शागिर्दों के ज़रीए उनमें तकसीम करवाया।

42 और सबने जी भरकर खाया।

43 जब शागिर्दों ने रोटियों और मछलियों के बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर गए।

44 खानेवाले मर्दों की कुल तादाद 5,000 थी।

ईसा पानी पर चलता है

45 इसके ऐन बाद ईसा ने अपने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील के पार के शहर बैत-सैदा जाएँ। इतने में वह हुजूम को स्रखसत करना चाहता था।

46 उन्हें खैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया।

47 शाम के वक़्त शागिर्दों की कश्ती झील के बीच तक पहुँच गई थी जबकि ईसा खुद खुशकी पर अकेला रह गया था।

48 वहाँ से उसने देखा कि शागिर्द कश्ती को खेने में बड़ी जिद्दो-जहद कर रहे हैं, क्योंकि हवा उनके खिलाफ़ चल रही थी। तकरीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया। वह उनसे आगे निकलना चाहता था,

49 लेकिन जब उन्होंने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो सोचने लगे, “यह कोई भूत है” और चीखें मारने लगे।

50 क्योंकि सबने उसे देखकर दहशत खाई।

लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुखातिब होकर बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।”

51 फिर वह उनके पास आया और कश्ती में बैठ गया। उसी वक़्त हवा थम गई। शागिर्द निहायत ही हैरतज़दा हुए।

52 क्योंकि जब रोटियों का मोजिजा किया गया था तो वह इसका मतलब नहीं समझे थे बल्कि उनके दिल बेहिस हो गए थे।

गन्नेसरत में मरीजों की शफा

53 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास पहुँच गए और लंगर डाल दिया।

54 ज्योंही वह कश्ती से उतरे लोगों ने ईसा को पहचान लिया।

55 वह भाग भागकर उस पूरे इलाके में से गुजरे और मरीजों को चारपाइयों पर उठा उठाकर वहाँ ले आए जहाँ कहीं उन्हें खबर मिली कि वह ठहरा हुआ है।

56 जहाँ भी वह गया चाहे गाँव, शहर या बस्ती में, वहाँ लोगों ने बीमारों को चौकों में रखकर उससे मिन्नत की कि वह कम अज़ कम उन्हें अपने लिबास के दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे शफा मिली।

7

बापदादा की तालीम

1 एक दिन फ़रीसी और शरीअत के कुछ आलिम यस्शालम से ईसा से मिलने आए।

2 जब वह वहाँ थे तो उन्होंने देखा कि उसके कुछ शागिर्द अपने हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर यानी धोए बग़ैर खाना खा रहे हैं।

3 (क्योंकि यहूदी और ख़ासकर फ़रीसी फिरके के लोग इस मामले में अपने बापदादा की रिवायत को मानते हैं। वह अपने हाथ अच्छी तरह धोए बग़ैर खाना नहीं खाते।

4 इसी तरह जब वह कभी बाज़ार से आते हैं तो वह गुस्ल करके ही खाना खाते हैं। वह बहुत-सी और रिवायतों पर भी अमल करते हैं, मसलन कप, जग और केतली को धोकर पाक-साफ़ करने की रस्म पर।)

5 चुनाँचे फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों ने ईसा से पूछा, “आपके शागिर्द बापदादा की रिवायतों के मुताबिक़ जिंदगी क्यों नहीं गुज़ारते बल्कि रोटी भी हाथ पाक-साफ़ किए बग़ैर खाते हैं?”

6 ईसा ने जवाब दिया, “यसायाह नबी ने तुम रियाकारों के बारे में ठीक कहा जब उसने यह नबुव्वत की,

‘यह क़ौम अपने होंटों से तो मेरा एहताराम करती है
लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।

7 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफायदा।

क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम सिखाते हैं।’

8 तुम अल्लाह के अहकाम को छोड़कर इनसानी रिवायात की पैरवी करते हो।”

9 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम कितने सलीके से अल्लाह का हुकम मनसूख करते हो ताकि अपनी रिवायात को कायम रख सको।

10 मसलन मूसा ने फ़रमाया, ‘अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।’

11 लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्नत मानी है कि जो मुझे आपको देना था वह अल्लाह के लिए कुरबानी है’ तो तुम इसे जायज़ करार देते हो।

12 यों तुम उसे अपने माँ-बाप की मदद करने से रोक लेते हो।

13 और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी उस रिवायत से मनसूख कर लेते हो जो तुमने नसल-दर-नसल मुंतकिल की है। तुम इस किस्म की बहुत-सी हरकतें करते हो।”

क्या कुछ इनसान को नापाक कर देता है?

14 फिर ईसा ने दुबारा हुजूम को अपने पास बुलाया और कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश करो।

15 कोई ऐसी चीज़ है नहीं जो इनसान में दाखिल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के अंदर से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।”

16 [अगर कोई सुन सकता है तो वह सुन ले।]

17 फिर वह हुजूम को छोड़कर किसी घर में दाखिल हुआ। वहाँ उसके शागिर्दों ने पूछा, “इस तमसील का क्या मतलब है?”

18 उसने कहा, “क्या तुम भी इतने नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ बाहर से इनसान में दाखिल होता है वह उसे नापाक नहीं कर सकता?

19 वह तो उसके दिल में नहीं जाता बल्कि उसके मेदे में और वहाँ से निकलकर जाए-ज़रूरत में।” (यह कहकर ईसा ने हर किस्म का खाना पाक-साफ़ करार दिया।)

20 उसने यह भी कहा, “जो कुछ इनसान के अंदर से निकलता है वही उसे नापाक करता है।

21 क्योंकि लोगों के अंदर से, उनके दिलों ही से बुरे खयालात, हरामकारी, चोरी, कत्लो-गारत,

22 ज़िनाकारी, लालच, बदकारी, धोका, शहवतपरस्ती, हसद, बुहतान, गुस्सू और हमाक़त निकलते हैं।

23 यह तमाम बुराइयाँ अंदर ही से निकलकर इनसान को नापाक कर देती हैं।”

गैरयहूदी औरत का ईमान

24 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल में सूर के इलाके में आया। वहाँ वह किसी घर में दाखिल हुआ। वह नहीं चाहता था कि किसी को पता चले, लेकिन वह पोशीदा न रह सका।

25 फ़ौरन एक औरत उसके पास आई जिसने उसके बारे में सुन रखा था। वह उसके पाँवों में गिर गई। उस की छोटी बेटी किसी नापाक रूह के क़ब्ज़े में थी,

26 और उसने ईसा से गुज़ारिश की, “बदरूह को मेरी बेटी में से निकाल दें।” लेकिन वह औरत यूनानी थी और सूस्फ़ेनीके के इलाके में पैदा हुई थी,

27 इसलिए ईसा ने उसे बताया, “पहले बच्चों को जी भरकर खाने दे, क्योंकि यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया जाए।”

28 उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, लेकिन मेज़ के नीचे के कुत्ते भी बच्चों के गिरे हुए टुकड़े खाते हैं।”

29 ईसा ने कहा, “तूने अच्छा जवाब दिया, इसलिए जा, बदरूह तेरी बेटी में से निकल गई है।”

30 औरत अपने घर वापस चली गई तो देखा कि लडकी बिस्तर पर पड़ी है और बदरूह उसमें से निकल चुकी है।

गँगे-बहरे की शफ़ा

31 जब ईसा सूर से रवाना हुआ तो वह पहले शिमाल में वाके शहर सैदा को चला गया। फिर वहाँ से भी फ़ारिग़ होकर वह दुबारा गलील की झील के किनारे वाके दिकपुलिस के इलाके में पहुँच गया।

32 वहाँ उसके पास एक बहरा आदमी लाया गया जो मुश्किल ही से बोल सकता था। उन्होंने मिन्नत की कि वह अपना हाथ उस पर रखे।

33 ईसा उसे हज़ूम से दूर ले गया। उसने अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं और थूककर आदमी की ज़बान को छुआ।

34 फिर आसमान की तरफ नज़र उठाकर उसने आह भरी और उससे कहा, “इप्पफतह!” (इसका मतलब है “खुल जा!”)

35 फ़ौरन आदमी के कान खुल गए, ज़बान का बंधन टूट गया और वह ठीक ठीक बोलने लगा।

36 ईसा ने हाज़िरिन को हुकम दिया कि वह किसी को यह बात न बताएँ। लेकिन जितना वह मना करता था उतना ही लोग इसकी ख़बर फैलाते थे।

37 वह निहायत ही हैरान हुए और कहने लगे, “इसने सब कुछ अच्छा किया है, यह बहरों को सुनने की ताकत देता है और गूँगों को बोलने की।”

8

ईसा 4000 अफ़राद को खाना खिलाता है

1 उन दिनों में एक और मरतबा ऐसा हुआ कि बहुत-से लोग जमा हुए जिनके पास खाने का बंदोबस्त नहीं था। चुनाँचे ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा,

2 “मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई चीज़ नहीं है।

3 लेकिन अगर मैं इन्हें सख़सत कर दूँ और वह इस भूकी हालत में अपने अपने घर चले जाएँ तो वह रास्ते में थककर चूर हो जाएंगे। और इनमें से कई दूर-दराज़ से आए हैं।”

4 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान इलाक़े में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह खाकर सेर हो जाएँ?”

5 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”

उन्होंने जवाब दिया, “सात।”

6 ईसा ने हुज़ूम को ज़मीन पर बैठने को कहा। फिर सात रोटियों को लेकर उसने शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों को तकसीम करने के लिए दे दिया।

7 उनके पास दो-चार छोटी मछलियाँ भी थीं। ईसा ने उन पर भी शुक्रगुज़ारी की दुआ की और शागिर्दों को उन्हें बाँटने को कहा।

8 लोगों ने जी भरकर खाया। बाद में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए।

9 तकरीबन 4,000 आदमी हाज़िर थे। खाने के बाद ईसा ने उन्हें ख़सत कर दिया

10 और फ़ौरन कशती पर सवार होकर अपने शागिर्दों के साथ दल्मनूता के इलाक़े में पहुँच गया।

फ़रीसी इलाही निशान तलब करते हैं

11 इस पर फ़रीसी निकलकर ईसा के पास आए और उससे बहस करने लगे। उसे आजमाने के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ़ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका इख़्तियार साबित हो जाए।

12 लेकिन उसने ठंडी आह भरकर कहा, “यह नसल क्यों इलाही निशान का मुतालबा करती है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि इसे कोई निशान नहीं दिया जाएगा।”

13 और उन्हें छोड़कर वह दुबारा कशती में बैठ गया और झील को पार करने लगा।

फ़रीसियों और हेरोदेस का ख़मीर

14 लेकिन शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए थे। कशती में उनके पास सिर्फ़ एक रोटी थी।

15 ईसा ने उन्हें हिदायत की, “ख़बरदार, फ़रीसियों और हेरोदेस के ख़मीर से होशियार रहना।”

16 शागिर्द आपस में बहस करने लगे, “वह इसलिए कह रहे होंगे कि हमारे पास रोटी नहीं है।”

17 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने कहा, “तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम अब तक न जानते, न समझते हो? क्या तुम्हारे दिल इतने बेहिस हो गए हैं?”

18 तुम्हारी आँखें तो हैं, क्या तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान तो हैं, क्या तुम सुन नहीं सकते? और क्या तुम्हें याद नहीं

19 जब मैंने 5,000 आदमियों को पाँच रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?”

उन्होंने जवाब दिया, “बारह”।

20 “और जब मैंने 4,000 आदमियों को सात रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?”

उन्होंने जवाब दिया, “सात।”

21 उसने पूछा, “क्या तुम अभी तक नहीं समझते?”

बैत-सैदा में अंधे की शफ़ा

22 वह बैत-सैदा पहुँचे तो लोग ईसा के पास एक अंधे आदमी को लाए। उन्होंने इलतमास की कि वह उसे छुए।

23 ईसा अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव से बाहर ले गया। वहाँ उसने उस की आँखों पर थूककर अपने हाथ उस पर रख दिए और पूछा, “क्या तू कुछ देख सकता है?”

24 आदमी ने नज़र उठाकर कहा, “हाँ, मैं लोगों को देख सकता हूँ। वह फिरते हुए दरख्तों की मानिंद दिखाई दे रहे हैं।”

25 ईसा ने दुबारा अपने हाथ उस की आँखों पर रखे। इस पर आदमी की आँखें पूरे तौर पर खुल गईं, उस की नज़र बहाल हो गई और वह सब कुछ साफ़ साफ़ देख सकता था।

26 ईसा ने उसे स्रखसत करके कहा, “इस गाँव में वापस न जाना बल्कि सीधा अपने घर चला जा।”

पतरस का इकरार

27 फिर ईसा वहाँ से निकलकर अपने शागिर्दों के साथ कैसरिया-फिलिप्पी के करीब के देहातों में गया। चलते चलते उसने उनसे पूछा, “मैं लोगों के नज़दीक कौन हूँ?”

28 उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि नबियों में से एक।”

29 उसने पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”

पतरस ने जवाब दिया, “आप मसीह हैं।”

30 यह सुनकर ईसा ने उन्हें किसी को भी यह बात बताने से मना किया।

ईसा अपनी मौत का जिक्र करता है

31 फिर ईसा उन्हें तालीम देने लगा, “लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे कत्ल भी किया जाएगा, लेकिन वह तीसरे दिन जी उठेगा।”

32 उसने उन्हें यह बात साफ़ साफ़ बताई। इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जाकर समझाने लगा।

33 ईसा मुड़कर शागिर्दों की तरफ़ देखने लगा। उसने पतरस को डाँटा, “शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की।”

34 फिर उसने शागिर्दों के अलावा हुज़ूम को भी अपने पास बुलाया। उसने कहा, “जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले।

35 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी और अल्लाह की खुशखबरी की खातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा।

36 क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महसूम हो जाए?

37 इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है?

38 जो भी इस ज़िनाकार और गुनाहअल्लूदा नसल के सामने मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस वक्त शरमाएगा जब वह अपने बाप के जलाल में मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ आएगा।”

9

1 ईसा ने उन्हें यह भी बताया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को कुदरत के साथ आते हुए देखेंगे।”

पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

2 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उस की शक्त्तो-सूरत उनके सामने बदल गई।

3 उसके कपड़े चमकने लगे और निहायत सफ़ेद हो गए। दुनिया में कोई भी धोबी कपड़े इतने सफ़ेद नहीं कर सकता।

4 फिर इलियास और मूसा जाहिर हुए और ईसा से बात करने लगे।

5 पतरस बोल उठा, “उस्ताद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आँ, हम तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।”

6 उसने यह इसलिए कहा कि तीनों शागिर्द सहमे हुए थे और वह नहीं जानता था कि क्या कहे।

7 इस पर एक बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है। इसकी सुनो।”

8 अचानक मूसा और इलियास ग़ायब हो गए। शागिर्दों ने चारों तरफ़ देखा, लेकिन सिर्फ़ ईसा नज़र आया।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम मुरदों में से जी न उठे।”

10 चुनाँचे उन्होंने यह बात अपने तक महदू रखी। लेकिन वह कई बार आपस में बहस करने लगे कि मुरदों में से जी उठने से क्या मुराद हो सकती है।

11 फिर उन्होंने उससे पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले इलियास का आना ज़रूरी है?”

12 ईसा ने जवाब दिया, “इलियास तो ज़रूर पहले सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। लेकिन कलामे-मुक़द्दस में इब्ने-आदम के बारे में यह क्यों लिखा है कि उसे बहुत दुख उठाना और हकीर समझा जाना है?”

13 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, इलियास तो आ चुका है और उन्होंने उसके साथ जो चाहा किया। यह भी कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ ही हुआ है।”

ईसा लडके में से बदरूह निकालता है

14 जब वह बाक़ी शागिर्दों के पास वापस पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनके गिर्द एक बड़ा हुज़ूम जमा है और शरीअत के कुछ उलमा उनके साथ बहस कर रहे हैं।

15 ईसा को देखते ही लोगों ने बड़ी बेचैनी से उस की तरफ़ दौड़कर उसे सलाम किया।

16 उसने शागिर्दों से सवाल किया, “तुम उनके साथ किसके बारे में बहस कर रहे हो?”

17 हुज़ूम में से एक आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैं अपने बेटे को आपके पास लाया था। वह ऐसी बदरूह के क़ब्ज़े में है जो उसे बोलने नहीं देती।

18 और जब भी वह उस पर ग़ालिब आती है वह उसे ज़मीन पर पटक देती है। बेटे के मुँह से झाग निकलने लगता और वह दाँत पीसने लगता है। फिर उसका

जिस्म अकड़ जाता है। मैंने आपके शागिर्दों से कहा तो था कि वह बदरूह को निकाल दें, लेकिन वह न निकाल सके।”

19 ईसा ने उनसे कहा, “ईमान से खाली नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त करूँ? लड़के को मेरे पास ले आओ।”

20 वह उसे ईसा के पास ले आए।

ईसा को देखते ही बदरूह लड़के को झँझोड़ने लगी। वह ज़मीन पर गिर गया और इधर-उधर लुढ़कते हुए मुँह से झाग निकालने लगा।

21 ईसा ने बाप से पूछा, “इसके साथ कब से ऐसा हो रहा है?”

उसने जवाब दिया, “बचपन से।

22 बहुत दफ़ा उसने इसे हलाक करने की खातिर आग या पानी में गिराया है। अगर आप कुछ कर सकते हैं तो तरस खाकर हमारी मदद करें।”

23 ईसा ने पूछा, “क्या मतलब, ‘अगर आप कुछ कर सकते हैं’? जो ईमान रखता है उसके लिए सब कुछ मुमकिन है।”

24 लड़के का बाप फ़ौरन चिल्ला उठा, “मैं ईमान रखता हूँ। मेरी बेएतकादी का इलाज करें।”

25 ईसा ने देखा कि बहुत-से लोग दौड़ दौड़कर देखने आ रहे हैं, इसलिए उसने नापाक रूह को डाँटा, “ऐ गूँगी और बहरी बदरूह, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि इसमें से निकल जा। कभी भी इसमें दुबारा दाखिल न होना!”

26 इस पर बदरूह चीख उठी और लड़के को शिद्दत से झँझोड़कर निकल गई। लड़का लाश की तरह ज़मीन पर पड़ा रहा, इसलिए सबने कहा, “वह मर गया है।”

27 लेकिन ईसा ने उसका हाथ पकड़कर उठने में उस की मदद की और वह खड़ा हो गया।

28 बाद में जब ईसा किसी घर में जाकर अपने शागिर्दों के साथ अकेला था तो उन्होंने उससे पूछा, “हम बदरूह को क्यों न निकाल सके?”

29 उसने जवाब दिया, “इस किस्म की बदरूह सिर्फ़ दुआ से निकाली जा सकती है।”

ईसा दूसरी दफ़ा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

30 वहाँ से निकलकर वह गलील में से गुजरे। ईसा नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि वह कहाँ है,

31 क्योंकि वह अपने शागिर्दों को तालीम दे रहा था। उसने उनसे कहा, “इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा। वह उसे कत्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

32 लेकिन शागिर्द इसका मतलब न समझे और वह ईसा से इसके बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

33 चलते चलते वह कफ़र्नहूम पहुँचे। जब वह किसी घर में थे तो ईसा ने शागिर्दों से सवाल किया, “रास्ते में तुम किस बात पर बहस कर रहे थे?”

34 लेकिन वह खामोश रहे, क्योंकि वह रास्ते में इस पर बहस कर रहे थे कि हममें से बड़ा कौन है?

35 ईसा बैठ गया और बारह शागिर्दों को बुलाकर कहा, “जो अब्बल होना चाहता है वह सबसे आखिर में आए और सबका खादिम हो।”

36 फिर उसने एक छोटे बच्चे को लेकर उनके दरमियान खड़ा किया। उसे गले लगाकर उसने उनसे कहा,

37 “जो मेरे नाम में इन बच्चों में से किसी को कबूल करता है वह मुझे ही कबूल करता है। और जो मुझे कबूल करता है वह मुझे नहीं बल्कि उसे कबूल करता है जिसने मुझे भेजा है।”

जो हमारे खिलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है

38 यहून्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने एक शख्स को देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा था। हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारी पैरवी नहीं करता।”

39 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना। जो भी मेरे नाम में मोजिज़ा करे वह अगले लमहे मेरे बारे में बुरी बातें नहीं कह सकेगा।

40 क्योंकि जो हमारे खिलाफ़ नहीं वह हमारे हक़ में है।

41 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी तुम्हें इस वजह से पानी का गलास पिलाए कि तुम मसीह के पैरोकार हो उसे ज़रूर अन्न मिलेगा।

आज़माइशें

42 और जो कोई मुझ पर ईमान रखनेवाले इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंद्र में फेंक दिया जाए।

43-44 अगर तेरा हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे पहले कि तू दो हाथों समेत जहन्नुम की कभी न बुझनेवाली आग में चला जाए [यानी वहाँ जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक हाथ से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो।

45-46 अगर तेरा पाँव तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे पहले कि तुझे दो पाँवों समेत जहन्नुम में फेंका जाए [जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो।

47-48 और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकाल देना। इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम में फेंका जाए जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती बेहतर यह है कि तू एक आँख से महरूम होकर अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो।

49 क्योंकि हर एक को आग से नमकीन किया जाएगा [और हर एक कुरबानी नमक से नमकीन की जाएगी]।

50 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका ज़ायका जाता रहे तो उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? अपने दरमियान नमक की खूबियाँ बरकरार रखो और सुलह-सलामती से एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारो।”

10

तलाक़ के बारे में तालीम

1 फिर ईसा उस जगह को छोड़कर यहूदिया के इलाक़े में और दरियाए-यरदन के पार चला गया। वहाँ भी हज़ूम जमा हो गया। उसने उन्हें मामूल के मुताबिक़ तालीम दी।

2 कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की गरज़ से सवाल किया, “क्या जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को तलाक़ दे?”

3 ईसा ने उनसे पूछा, “मूसा ने शरीअत में तुमको क्या हिदायत की है?”

4 उन्होंने कहा, “उसने इजाज़त दी है कि आदमी तलाक़नामा लिखकर बीवी को सख़सत कर दे।”

5 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी सख़्तदिली की वजह से तुम्हारे लिए यह हुक्म लिखा था।

6 लेकिन इत्तिदा में ऐसा नहीं था। दुनिया की तखलीक के वक्त अल्लाह ने उन्हें मर्द और औरत बनाया।

7 'इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है।

8 वह दोनों एक हो जाते हैं।' यों वह कलामे-मुकद्दस के मुताबिक दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं।

9 तो जिसे अल्लाह ने खुद जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।"

10 किसी घर में आकर शागिर्दों ने यह बात दुबारा छेड़कर ईसा से मज़ीद दरियाफ्त किया।

11 उसने उन्हें बताया, "जो अपनी बीवी को तलाक देकर किसी और से शादी करे वह उसके साथ जिना करता है।

12 और जो औरत अपने खाविद को तलाक देकर किसी और से शादी करे वह भी जिना करती है।"

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को ईसा के पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। लेकिन शागिर्दों ने उनको मलामत की।

14 यह देखकर ईसा नाराज़ हुआ। उसने उनसे कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि अल्लाह की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।

15 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे की तरह कबूल न करे वह उसमें दाखिल नहीं होगा।"

16 यह कहकर उसने उन्हें गले लगाया और अपने हाथ उन पर रखकर उन्हें बरकत दी।

अमीर मुश्किल से बादशाही में दाखिल हो सकते हैं

17 जब ईसा रवाना होने लगा तो एक आदमी दौड़कर उसके पास आया और उसके सामने घुटने टेककर पूछा, "नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि अबदी जिंदगी मीरास में पाऊँ?"

18 ईसा ने पूछा, "तू मुझे नेक क्यों कहता है? कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह।

19 तू शरीरगत के अहकाम से तो वाकिफ़ है। कत्ल न करना, जिना न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, धोका न देना, अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना।”

20 आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैंने जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी की है।”

21 ईसा ने गौर से उस की तरफ़ देखा। उसके दिल में उसके लिए प्यार उभर आया। वह बोला, “एक काम रह गया है। जा, अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त करके पैसे गरीबों में तकसीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर खज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।”

22 यह सुनकर आदमी का मुँह लटक गया और वह मायूस होकर चला गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

23 ईसा ने अपने इर्दगिर्द देखकर शागिर्दों से कहा, “दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाखिल होना कितना मुश्किल है!”

24 शागिर्द उसके यह अलफ़ाज़ सुनकर हैरान हुए। लेकिन ईसा ने दुबारा कहा, “बच्चो! अल्लाह की बादशाही में दाखिल होना कितना मुश्किल है।

25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में दाखिल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”

26 इस पर शागिर्द मज़ीद हैरतज़दा हुए और एक दूसरे से कहने लगे, “फिर किस को नज़ात मिल सकती है?”

27 ईसा ने गौर से उनकी तरफ़ देखकर जवाब दिया, “यह इन्सान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन अल्लाह के लिए नहीं। उसके लिए सब कुछ मुमकिन है।”

28 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, जिसने भी मेरी और अल्लाह की ख़ुशख़बरी की ख़ातिर अपने घर, भाइयों, बहनों, माँ, बाप, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है

30 उसे इस ज़माने में ईज़ारसानी के साथ साथ सौ गुना ज़्यादा घर, भाई, बहनें, माँ, बच्चे और खेत मिल जाएंगे। और आनेवाले ज़माने में उसे अबदी जिंदगी मिलेगी।

31 लेकिन बहुत-से लोग जो अब अक्वल हैं उस वक़्त आखिर होंगे और जो अब आखिर हैं वह अक्वल होंगे।”

ईसा तीसरी दफा अपनी मौत का जिक्र करता है

32 अब वह यरूशलम की तरफ बढ़ रहे थे और ईसा उनके आगे आगे चल रहा था। शागिर्द हैरतज्झदा थे जबकि उनके पीछे चलनेवाले लोग सहमे हुए थे। एक और दफा बारह शागिर्दों को एक तरफ ले जाकर ईसा उन्हें वह कुछ बताने लगा जो उसके साथ होने को था।

33 उसने कहा, “हम यरूशलम की तरफ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर सज़ाए-मौत का फतवा देकर उसे गैरयहूदियों के हवाले कर देंगे,

34 जो उसका मज़ाक उड़ाएँगे, उस पर थूकेंगे, उसको कोड़े मारेंगे और उसे कत्ल करेंगे। लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

याकूब और यूहन्ना की गुज़ारिश

35 फिर ज़बदी के बेटे याकूब और यूहन्ना उसके पास आए। वह कहने लगे, “उस्ताद, आपसे एक गुज़ारिश है।”

36 उसने पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”

37 उन्होंने जवाब दिया, “जब आप अपने जलाली तख्त पर बैठेंगे तो हममें से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे को बाएँ हाथ।”

38 ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने को हूँ या वह बपतिस्मा ले सकते हो जो मैं लेने को हूँ?”

39 उन्होंने जवाब दिया, “जी, हम कर सकते हैं।” फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम ज़रूर वह प्याला पियोगे जो मैं पीने को हूँ और वह बपतिस्मा लोगे जो मैं लेने को हूँ।

40 लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन बाएँ हाथ। अल्लाह ने यह मक़ाम सिर्फ़ उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने ख़ुद मुक़र्रर किया है।”

41 जब बाक़ी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें याकूब और यूहन्ना पर गुस्सा आया।

42 इस पर ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि कौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब डालते हैं, और उनके बड़े अफ़सर उन पर अपने इख़्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं।

43 लेकिन तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा खादिम बने

44 और जो तुममें अब्बल होना चाहे वह सबका गुलाम बने।

45 क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया कि खिदमत ले बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जान फिधा के तौर पर देकर बहुतों को छुड़ाए।”

अंधे बरतिमाई की शफा

46 वह यरीह पहुँच गए। उसमें से गुज़रकर ईसा शागिर्दों और एक बड़े हुजूम के साथ बाहर निकलने लगा। वहाँ एक अंधा भीक माँगनेवाला रास्ते के किनारे बैठा था। उसका नाम बरतिमाई (तिमाई का बेटा) था।

47 जब उसने सुना कि ईसा नासरी करीब ही है तो वह चिल्लाने लगा, “ईसा इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

48 बहुत-से लोगों ने उसे डाँटकर कहा, “खामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा, “इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

49 ईसा स्क्रकर बोला, “उसे बुलाओ।”

चुनाँचे उन्होंने उसे बुलाकर कहा, “हौसला रख। उठ, वह तुझे बुला रहा है।”

50 बरतिमाई ने अपनी चादर ज़मीन पर फेंक दी और उछलकर ईसा के पास आया।

51 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?”

उसने जवाब दिया, “उस्ताद, यह कि मैं देख सकूँ।”

52 ईसा ने कहा, “जा, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।”

ज्योंही ईसा ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो गईं और वह ईसा के पीछे चलने लगा।

11

यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तक़बाल

1 वह यरूशलम के करीब बैत-फ़गे और बैत-अनियाह पहुँचने लगे। यह गाँव जैतून के पहाड़ पर वाक़े थे। ईसा ने अपने शागिर्दों में से दो को भेजा

2 और कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बँधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर यहाँ ले आओ।

3 अगर कोई पूछे कि यह क्या कर रहे हो तो उसे बता देना, 'खुदावंद को इसकी ज़रूरत है। वह जल्द ही इसे वापस भेज देंगे।'।”

4 दोनों शागिर्द वहाँ गए तो एक जवान गधा देखा जो बाहर गली में किसी दरवाजे के साथ बँधा हुआ था। जब वह उस की रस्सी खोलने लगे

5 तो वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पूछा, “तुम यह क्या कर रहे हो? जवान गधे को क्यों खोल रहे हो?”

6 उन्होंने जवाब में वह कुछ बता दिया जो ईसा ने उन्हें कहा था। इस पर लोगों ने उन्हें खोलने दिया।

7 वह जवान गधे को ईसा के पास ले आए और अपने कपड़े उस पर रख दिए। फिर ईसा उस पर सवार हुआ।

8 जब वह चल पड़ा तो बहुत-से लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने हरी शाखें भी उसके आगे बिछा दीं जो उन्होंने खेतों के दरख्तों से काट ली थीं।

9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्ला चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

“होशाना! *

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।

10 मुबारक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है।

आसमान की बलंदियों पर होशाना।” †

11 यों ईसा यरूशलम में दाखिल हुआ। वह बैतुल-मुकद्दस में गया और अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाकर सब कुछ देखने के बाद चला गया। चूँकि शाम का पिछला वक़्त था इसलिए वह बारह शागिर्दों समेत शहर से निकलकर बैत-अनियाह वापस गया।

अंजीर के दरख़्त पर लानत

12 अगले दिन जब वह बैत-अनियाह से निकल रहे थे तो ईसा को भूक लगी।

13 उसने कुछ फासले पर अंजीर का एक दरख़्त देखा जिस पर पत्ते थे। इसलिए वह यह देखने के लिए उसके पास गया कि आया कोई फल लगा है या नहीं। लेकिन

* **11:9** होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है। † **11:10** होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उनसुर भी पाया जाता है।

जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पत्ते ही पत्ते हैं। वजह यह थी कि अंजीर का मौसम नहीं था।

14 इस पर ईसा ने दरख्त से कहा, “अब से हमेशा तक तुझसे फल खाया न जा सके!” उसके शागिर्दों ने उस की यह बात सुन ली।

ईसा बैतुल-मुकद्दस में जाता है

15 वह यरूशलम पहुँच गए। और ईसा बैतुल-मुकद्दस में जाकर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ कुरबानियों के लिए दरकार चीजों की खरीदो-फरोख्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की कुरसियाँ उलट दीं

16 और जो तिजारती माल लेकर बैतुल-मुकद्दस के सहनों में से गुज़र रहे थे उन्हें रोक लिया।

17 तालीम देकर उसने कहा, “क्या कलामे-मुकद्दस में नहीं लिखा है, ‘मेरा घर तमाम क्रौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा’? लेकिन तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।”

18 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने जब यह सुना तो उसे कत्ल करने का मौक़ा ढूँढ़ने लगे। क्योंकि वह उससे डरते थे इसलिए कि पूरा हुजूम उस की तालीम से निहायत हैरान था।

19 जब शाम हुई तो ईसा और उसके शागिर्द शहर से निकल गए।

अंजीर के दरख्त से सबक

20 अगले दिन वह सुबह-सवेरे अंजीर के उस दरख्त के पास से गुज़रे जिस पर ईसा ने लानत भेजी थी। जब उन्होंने उस पर गौर किया तो मालूम हुआ कि वह जड़ों तक सूख गया है।

21 तब पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कल अंजीर के दरख्त से की थी। उसने कहा, “उस्ताद, यह देखें! अंजीर के जिस दरख्त पर आपने लानत भेजी थी वह सूख गया है।”

22 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह पर ईमान रखो।

23 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अगर कोई इस पहाड़ से कहे, ‘उठ, अपने आपको समुंद्र में गिरा दे’ तो यह हो जाएगा। शर्त सिर्फ़ यह है कि वह शक न करे बल्कि ईमान रखे कि जो कुछ उसने कहा है वह उसके लिए हो जाएगा।

24 इसलिए मैं तुमको बताता हूँ, जब भी तुम दुआ करके कुछ माँगते हो तो ईमान रखो कि तुमको मिल गया है। फिर वह तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा।

25 और जब तुम खड़े होकर दुआ करते हो तो अगर तुम्हें किसी से शिकायत हो तो पहले उसे मुआफ़ करो ताकि आसमान पर तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ करे।

26 [और अगर तुम मुआफ़ न करो तो तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे गुनाह भी मुआफ़ नहीं करेगा।]”

किसने ईसा को इख्तियार दिया?

27 वह एक और दफ़ा यरूशलम पहुँच गए। और जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में फिर रहा था तो राहनुमा इमाम, शरीअत के उलमा और बुजुर्ग उसके पास आए।

28 उन्होंने पूछा, “आप यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह करने का इख्तियार दिया है?”

29 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता दूँगा कि मैं यह किस इख्तियार से कर रहा हूँ।

30 मुझे बताओ, क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था या इनसानी?”

31 वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न लाए?’

32 लेकिन हम कैसे कह सकते हैं कि वह इनसानी था?” वजह यह थी कि वह आम लोगों से डरते थे, क्योंकि सब मानते थे कि यहया वाकई नबी था।

33 चुनौचे उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते।”

ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहा हूँ।”

12

अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओ की बगावत

1 फिर वह तमसीलों में उनसे बात करने लगा। “किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग़ लगाया। उसने उस की चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढ़े की खुदाई की और पहेदारों के लिए बुर्ज तामीर किया। फिर वह उसे मुज़ारेओ के सुपर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया।

2 जब अंगूर पक गए तो उसने अपने नौकर को मुज़ारेओं के पास भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करे।

3 लेकिन मुज़ारेओं ने उसे पकड़कर उस की पिटाई की और उसे खाली हाथ लौटा दिया।

4 फिर मालिक ने एक और नौकर को भेज दिया। लेकिन उन्होंने उस की भी बेइज्जती करके उसका सर फोड़ दिया।

5 जब मालिक ने तीसरे नौकर को भेजा तो उन्होंने उसे मार डाला। यों उसने कई एक को भेजा। बाज़ को उन्होंने मारा पीटा, बाज़ को कत्ल किया।

6 आखिरकार सिर्फ़ एक बाक़ी रह गया था। वह था उसका प्यारा बेटा। अब उसने उसे भेजकर कहा, 'आखिर मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।'

7 लेकिन मुज़ारे एक दूसरे से कहने लगे, 'यह ज़मीन का वारिस है। आओ हम इसे मार डालें तो फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।'

8 उन्होंने उसे पकड़कर कत्ल किया और बाग से बाहर फेंक दिया।

9 अब बताओ, बाग का मालिक क्या करेगा? वह जाकर मुज़ारेओं को हलाक करेगा और बाग को दूसरों के सुपुर्द कर देगा।

10 क्या तुमने कलामे-मुकद्दस का यह हवाला नहीं पढा,

'जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया

वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।

11 यह रब ने किया

और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है'।"

12 इस पर दीनी राहनुमाओं ने ईसा को गिरिफ्तार करने की कोशिश की, क्योंकि वह समझ गए थे कि तमसील में बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह हुजूम से डरते थे, इसलिए वह उसे छोड़कर चले गए।

क्या टैक्स देना जायज़ है?

13 बाद में उन्होंने कुछ फ़रीसियों और हेरोदेस के पैरोकारों को उसके पास भेज दिया ताकि वह उसे कोई ऐसी बात करने पर उभारें जिससे उसे पकड़ा जा सके।

14 वह उसके पास आकर कहने लगे, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और किसी की परवा नहीं करते। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि दियायनतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़? क्या हम अदा करें या न करें?"

15 लेकिन ईसा ने उनकी रियाकारी जानकर उनसे कहा, “मुझे क्यों फँसाना चाहते हो? चाँदी का एक रोमी सिक्का मेरे पास ले आओ।”

16 वह एक सिक्का उसके पास ले आए तो उसने पूछा, “किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?” उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

17 उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”

उसका यह जवाब सुनकर उन्होंने बड़ा ताज्जुब किया।

क्या हम जी उठेंगे?

18 फिर कुछ सदूकी ईसा के पास आए। सदूकी नहीं मानते कि रोजे-क्रियामत मरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक सवाल किया,

19 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे।

20 अब फ़र्ज़ करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ।

21 इस पर दूसरे ने उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की।

22 यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। आखिर में बेवा भी फ़ौत हो गई।

23 अब बताएँ कि क्रियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”

24 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इसलिए गलती पर हो कि न तुम कलामे-मुक़द्दस से वाकिफ़ हो, न अल्लाह की कुदरत से।

25 क्योंकि जब मरदे जी उठेंगे तो न वह शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फ़रिशतों की मानिंद होंगे।

26 रही यह बात कि मरदे जी उठेंगे। क्या तुमने मूसा की किताब में नहीं पढ़ा कि अल्लाह जलती हुई झाड़ी में से किस तरह मूसा से हमकलाम हुआ? उसने फ़रमाया, ‘मैं इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक़्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके थे।

27 इसका मतलब है कि यह हक्रीकत में जिंदा हैं, क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं, बल्कि जिंदों का खुदा है। तुमसे बड़ी गलती हुई है।”

अव्वल हुक्म

28 इतने में शरीअत का एक आलिम उनके पास आया। उसने उन्हें बहस करते हुए सुना था और जान लिया कि ईसा ने अच्छा जवाब दिया, इसलिए उसने पूछा, “तमाम अहकाम में से कौन-सा हुक्म सबसे अहम है?”

29 ईसा ने जवाब दिया, “अव्वल हुक्म यह है : ‘सुन ऐ इसराईल! रब हमारा खुदा एक ही रब है।

30 रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताकत से प्यार करना।’

31 दूसरा हुक्म यह है : ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ दीगर कोई भी हुक्म इन दो अहकाम से अहम नहीं है।”

32 उस आलिम ने कहा, “शाबाश, उस्ताद! आपने सच कहा है कि अल्लाह सिर्फ एक ही है और उसके सिवा कोई और नहीं है।

33 हमें उसे अपने पूरे दिल, अपने पूरे ज़हन और अपनी पूरी ताकत से प्यार करना चाहिए और साथ साथ अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखनी चाहिए जैसी अपने आपसे रखते हैं। यह दो अहकाम भस्म होनेवाली तमाम कुरबानियों और दीगर नज़रों से ज्यादा अहमियत रखते हैं।”

34 जब ईसा ने उसका यह जवाब सुना तो उससे कहा, “तू अल्लाह की बादशाही से दूर नहीं है।”

इसके बाद किसी ने भी उससे सवाल पूछने की ज़रूरत न की।

मसीह के बारे में सवाल

35 जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था तो उसने पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों दावा करते हैं कि मसीह दाऊद का फ़रज़ंद है?”

36 क्योंकि दाऊद ने तो खुद रूहुल-कुद्स की मारिफ़त यह फ़रमाया,
‘रब ने मेरे रब से कहा,
मेरे दहने हाथ बैठ,
जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’

37 दाऊद तो खुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़ंद हो सकता है?”

शरीअत के उलमा से ख़बरदार रहना

एक बड़ा हुज़ूम मज़े से ईसा की बातें सुन रहा था।

38 उन्हें तालीम देते वक़्त उसने कहा, “उलमा से ख़बरदार रहो! क्योंकि वह शानदार चोगे पहनकर इधर-उधर फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज़्ज़त करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं।

39 उनकी बस एक ही खाहिश होती है कि इबादतखानों और ज़ियाफ़तों में इज़्ज़त की कुरसियों पर बैठ जाएँ।

40 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख़्त सज़ा मिलेगी।”

बेवा का चंदा

41 ईसा बैतुल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स के मुक़ाबिल बैठ गया और हुज़ूम को हदिये डालते हुए देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रक़में डाल रहे थे।

42 फिर एक गरीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें ताँबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए।

43 ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस गरीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है।

44 क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद होने के बावजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।”

13

बैतुल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

1 उस दिन जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस से निकल रहा था तो उसके शागिर्दों ने कहा, “उस्ताद, देखें कितने शानदार पत्थर और इमारतें हैं!”

2 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमको यह बड़ी बड़ी इमारतें नज़र आती हैं? पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

मुसीबतों और ईज़ारसानी की पेशगोई

3 बाद में ईसा जैतून के पहाड़ पर बैतुल-मुकद्दस के मुकाबिल बैठ गया। पतरस, याकूब, यहून्ना और अंदरियास अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा,

4 “हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिससे मालूम होगा कि यह अब पूरा होने को है?”

5 ईसा ने जवाब दिया, “खबरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे।

6 बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ।’ यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे।

7 जब जंगों की खबरें और अफ़वाहें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी आखिरत नहीं होगी।

8 एक कौम दूसरी के खिलाफ़ उठ खड़ी होगी और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ़। जगह जगह ज़लज़ले आएँगे, काल पड़ेंगे। लेकिन यह सिर्फ़ दर्द-ज़ह की इब्तिदा ही होगी।

9 तुम खुद खबरदार रहो। तुमको मकामी अदालतों के हवाले कर दिया जाएगा और लोग यहूदी इबादतखानों में तुम्हें कोड़े लगवाएँगे। मेरी खातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा। यों तुम उन्हें मेरी गवाही दोगे।

10 लाज़िम है कि आखिरत से पहले अल्लाह की खुशख़बरी तमाम अक़वाम को सुनाई जाए।

11 लेकिन जब लोग तुमको गिरिफ़्तार करके अदालत में पेश करेंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ। बस वही कुछ कहना जो अल्लाह तुम्हें उस वक़्त बताएगा। क्योंकि उस वक़्त तुम नहीं बल्कि रूहल-कुद्दस बोलनेवाला होगा।

12 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले कर देगा। बच्चे अपने वालिदैन के खिलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल करवाएँगे।

13 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आखिर तक कायम रहेगा उसे नजात मिलेगी।

बैतुल-मुकद्दस की बेहुरमती

14 एक दिन आया जब तुम वहाँ जहाँ उसे नहीं होना चाहिए वह कुछ खड़ा देखोगे जो बेहुरमती और तबाही का बाइस है।” (कारी इस पर ध्यान दे!) “उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी इलाक़े में पनाह लें।

15 जो अपने घर की छत पर हो वह न उतरे, न कुछ साथ ले जाने के लिए घर में दाखिल हो जाए।

16 जो खेत में हो वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए।

17 उन खवातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों।

18 दुआ करो कि यह वाक़िया सर्दियों के मौसम में पेश न आए।

19 क्योंकि उन दिनों में ऐसी मुसीबत होगी कि दुनिया की तखलीक़ से आज तक देखने में न आई होगी। इस क्रिस्म की मुसीबत बाद में भी कभी नहीं आएगी।

20 और अगर खुदावंद इस मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न करता तो कोई न बचता। लेकिन उसने अपने चुने हुआओं की खातिर उसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया है।

21 उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, 'देखो, मसीह यहाँ है,' या 'वह वहाँ है' तो उस की बात न मानना।

22 क्योंकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े होंगे जो अजीबो-गरीब निशान और मोजिज़े दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन होता।

23 इसलिए ख़बरदार! मैंने तुमको पहले ही इन सब बातों से आगाह कर दिया है।

इब्ने-आदम की आमद

24 मुसीबत के उन दिनों के बाद सूरज तारीक़ हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी।

25 सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की कुव्वतें हिलाई जाएँगी।

26 उस वक़्त लोग इब्ने-आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ बादलों में आते हुए देखेंगे।

27 और वह अपने फ़रिश्तों को भेज देगा ताकि उसके चुने हुआओं को चारों तरफ़ से जमा करें, दुनिया के कोने कोने से आसमान की इतहा तक इक़ठा करें।

अंजीर के दरख़्त से सबक़

28 अंजीर के दरख़्त से सबक़ सीखो। ज्योंही उस की शाखें नरम और लचकदार हो जाती हैं और उनसे कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुमको मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम करीब आ गया है।

29 इसी तरह जब तुम यह वाकियात देखोगे तो जान लोगे कि इब्ने-आदम की आमद करीब बल्कि दरवाजे पर है।

30 मैं तुमको सच बताता हूँ, इस नसल के खत्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक्रे होगा।

31 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक कायम रहेंगी।

किसी को भी उस की आमद का वक्रत मालूम नहीं

32 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिशतों और फ़रज़ंद को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को।

33 चुनौचे ख़बरदार और चौकन्ने रहो! क्योंकि तुमको नहीं मालूम कि यह वक्रत कब आएगा।

34 इब्ने-आदम की आमद उस आदमी से मुताबिकत रखती है जिसे किसी सफ़र पर जाना था। घर छोड़ते वक्रत उसने अपने नौकरों को इंतज़ाम चलाने का इख्तियार देकर हर एक को उस की अपनी ज़िम्मादारी सौंप दी। दरबान को उसने हुक्म दिया कि वह चौकस रहे।

35 तुम भी इसी तरह चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का मालिक कब वापस आएगा, शाम को, आधी रात को, मुरग़ के बाँग़ देते या पौ फटते वक्रत।

36 ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुमको सोते पाए।

37 यह बात मैं न सिर्फ़ तुमको बल्कि सबको बताता हूँ, चौकस रहो!”

14

ईसा के खिलाफ़ मनसूबाबंदियाँ

1 फ़सह और बेख़मीरी रोटी की ईद करीब आ गई थी। सिर्फ़ दो दिन रह गए थे। राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को किसी चालाकी से गिरिफ़्तार करके क़त्ल करने की तलाश में थे।

2 उन्होंने कहा, “लेकिन यह ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल मच जाए।”

खातून ईसा पर खुशबू उंडेलती है

3 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक आदमी के घर में दाखिल हुआ जो किसी वक्रत कोढ़ का मरीज़ था। उसका नाम शमौन था। ईसा खाना खाने के लिए

बैठ गया तो एक औरत आई। उसके पास खालिस जटामासी के निहायत क्रीमती इत्र का इत्रदान था। उसका सर तोड़कर उसने इत्र ईसा के सर पर उंडेल दिया।

4 हाज़िरीन में से कुछ नाराज़ हुए। “इतना क्रीमती इत्र ज़ाया करने की क्या ज़रूरत थी?”

5 इसकी क्रीमत कम अज़ कम चाँदी के 300 सिक्के थी। अगर इसे बेचा जाता तो इसके पैसे गरीबों को दिए जा सकते थे।” ऐसी बातें करते हुए उन्होंने उसे झिड़का।

6 लेकिन ईसा ने कहा, “इसे छोड़ दो, तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक नेक काम किया है।

7 गरीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, और तुम जब भी चाहो उनकी मदद कर सकोगे। लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।

8 जो कुछ वह कर सकती थी उसने किया है। मुझ पर इत्र उंडेलने से वह मुकर्ररा वक़्त से पहले मेरे बदन को दफनाने के लिए तैयार कर चुकी है।

9 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की खुशखबरी का एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस खातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

10 फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शागिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया ताकि ईसा को उनके हवाले करने की बात करे।

11 उसके आने का मक्कसद सुनकर वह खुश हुए और उसे पैसे देने का वादा किया। चुनौचे वह ईसा को उनके हवाले करने का मौका ढूँडने लगा।

फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ

12 बेखमीरी रोटी की ईद आई जब लोग फ़सह के लेले को कुरबान करते थे। ईसा के शागिर्दों ने उससे पूछा, “हम कहाँ आपके लिए फ़सह का खाना तैयार करें?”

13 चुनौचे ईसा ने उनमें से दो को यह हिदायत देकर यरूशलम भेज दिया कि “जब तुम शहर में दाखिल होगे तो तुम्हारी मुलाकात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे हो लेना।

14 जिस घर में वह दाखिल हो उसके मालिक से कहना, ‘उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?’

15 वह तुम्हें दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। वह तैयार होगा। हमारे लिए फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।”

16 दोनों चले गए तो शहर में दाखिल होकर सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया।

गद्गार कौन है?

17 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों समेत वहाँ पहुँच गया।

18 जब वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे तो उसने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, तुममें से एक जो मेरे साथ खाना खा रहा है मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

19 शागिर्द यह सुनकर गमगीन हुए। बारी बारी उन्होंने उससे पूछा, “मैं तो नहीं हूँ?”

20 ईसा ने जवाब दिया, “तुम बारह में से एक है। वह मेरे साथ अपनी रोटी सालन के बरतन में डाल रहा है।

21 इब्ने-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस शरख़्स पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”

फ़सह का आखिरी खाना

22 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर शक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, “यह लो, यह मेरा बदन है।”

23 फिर उसने मै का प्याला लेकर शक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें दे दिया। सबने उसमें से पी लिया।

24 उसने उनसे कहा, “यह मेरा खून है, नए अहद का वह खून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है।

25 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे नए सिरे से अल्लाह की बादशाही में ही पियूँगा।”

26 फिर वह एक ज़बूर गाकर निकले और ज़ैतून के पहाड़ के पास पहुँचे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

27 ईसा ने उन्हें बताया, “तुम सब बरग़शता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में अल्लाह फ़रमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।’

28 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”

29 पतरस ने एतराज किया, “दूसरे बेशक सब बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।”

30 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी रात मुरग के दूसरी दफा बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”

31 पतरस ने इसरार किया, “हरगिज नहीं! मैं आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े।”

दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

गत्समनी बाग में ईसा की दुआ

32 वह एक बाग में पहुँचे जिसका नाम गत्समनी था। ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता हूँ।”

33 उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह घबराकर बेकरार होने लगा।

34 उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर जागते रहो।”

35 कुछ आगे जाकर वह ज़मीन पर गिर गया और दुआ करने लगा कि अगर मुमकिन हो तो मुझे आनेवाली घड़ियों की तकलीफ से गुज़रना न पड़े।

36 उसने कहा, “ऐ अब्बा, ऐ बाप! तेरे लिए सब कुछ मुमकिन है। दुख का यह प्याला मुझसे हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।”

37 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से कहा, “शमौन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक घंटा भी नहीं जाग सका?”

38 जागते और दुआ करते रहो ताकि तुम आजमाइश में न पड़ो। क्योंकि रूह तो तैयार है, लेकिन जिस्म कमज़ोर।”

39 एक बार फिर उसने जाकर वही दुआ की जो पहले की थी।

40 जब वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं, क्योंकि नींद की बदौलत उनकी आँखें बोझिल थीं। वह नहीं जानते थे कि क्या जवाब दें।

41 जब ईसा तीसरी बार वापस आया तो उसने उनसे कहा, “तुम अभी तक सो और आराम कर रहे हो? बस काफ़ी है। वक्त आ गया है। देखो, इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले किया जा रहा है।

42 उठो। आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन के हवाले करनेवाला करीब आ चुका है।”

ईसा की गिरिफ्तारी

43 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहदाह पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का हुजूम था। उन्हें राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और बुजुर्गों ने भेजा था।

44 इस गद्गार यहदाह ने उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरिफ्तार करके ले जाएँ।

45 ज्योंही वह पहुँचे यहदाह ईसा के पास गया और “उस्ताद!” कहकर उसे बोसा दिया।

46 इस पर उन्होंने उसे पकड़कर गिरिफ्तार कर लिया।

47 लेकिन ईसा के पास खड़े एक शख्स ने अपनी तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म के गुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया।

48 ईसा ने उनसे पूछा, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लिए मुझे गिरिफ्तार करने निकले हो?”

49 मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था और तालीम देता रहा, मगर तुमने मुझे गिरिफ्तार नहीं किया। लेकिन यह इसलिए हो रहा है ताकि कलामे-मुक़द्दस की बातें पूरी हो जाएँ।”

50 फिर सबके सब उसे छोड़कर भाग गए।

51 लेकिन एक नौजवान ईसा के पीछे पीछे चलता रहा जो सिर्फ़ चादर ओढ़े हुए था। लोगों ने उसे पकड़ने की कोशिश की,

52 लेकिन वह चादर छोड़कर नंगी हालत में भाग गया।

यहदी अदालते-आलिया के सामने

53 वह ईसा को इमामे-आज़म के पास ले गए जहाँ तमाम राहनुमा इमाम, बुजुर्ग और शरीअत के उलमा भी जमा थे।

54 इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच गया। वहाँ वह मुलाज़िमों के साथ बैठकर आग तापने लगा।

55 मकान के अंदर राहनुमा इमाम और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा के खिलाफ़ गवाहियाँ ढूँड रहे थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सकें। लेकिन कोई गवाही न मिली।

56 काफ़ी लोगों ने उसके खिलाफ़ झूटी गवाही तो दी, लेकिन उनके बयान एक दूसरे के मुतज़ाद थे।

57 आख़िरकार बाज़ ने खड़े होकर यह झूटी गवाही दी,

58 “हमने इसे यह कहते सुना है कि मैं इनसान के हाथों के बने इस बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर तीन दिन के अंदर अंदर नया मक़दिस तामीर कर दूँगा, एक ऐसा मक़दिस जो इनसान के हाथ नहीं बनाएँगे।”

59 लेकिन उनकी गवाहियाँ भी एक दूसरी से मुतज़ाद थीं।

60 फिर इमामे-आज़म ने हाज़िरिन के सामने खड़े होकर ईसा से पूछा, “क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे खिलाफ़ दे रहे हैं?”

61 लेकिन ईसा खामोश रहा। उसने कोई जवाब न दिया। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल किया, “क्या तू अल-हमीद का फ़रज़ंद मसीह है?”

62 ईसा ने कहा, “जी, मैं हूँ। और आइंदा तुम इब्ने-आदम को कादिरे-मुतलक के दहने हाथ बैठे और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”

63 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही!”

64 आपने ख़ुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है। आपका क्या फ़ैसला है?” सबने उसे सज़ाए-मौत के लायक़ करार दिया।

65 फिर कुछ उस पर थूकने लगे। उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँधी और उसे मुक्के मार मारकर कहने लगे, “नबुव्वत कर!” मुलाज़िमों ने भी उसे थप्पड़ मारे।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

66 इस दौरान पतरस नीचे सहन में था। इमामे-आज़म की एक नौकरानी वहाँ से गुज़री

67 और देखा कि पतरस वहाँ आग ताप रहा है। उसने गौर से उस पर नज़र की और कहा, “तुम भी नासरत के उस आदमी ईसा के साथ थे।”

68 लेकिन उसने इनकार किया, “मैं नहीं जानता या समझता कि तू क्या बात कर रही है।” यह कहकर वह गेट के करीब चला गया। [उसी लमहे मुरग ने बाँग दी।]

69 जब नौकरानी ने उसे वहाँ देखा तो उसने दुबारा पास खड़े लोगों से कहा, “यह बंदा उनमें से है।”

70 दुबारा पतरस ने इनकार किया।

थोड़ी देर के बाद पतरस के साथ खड़े लोगों ने भी उससे कहा, “तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि तुम गलील के रहनेवाले हो।”

71 इस पर पतरस ने क्रसम खाकर कहा, “मुझ पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं उस आदमी को नहीं जानता जिसका जिक्र तुम कर रहे हो।”

72 फ़ौरन मुरग की बाँग दूसरी मरतबा सुनाई दी। फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने उससे कही थी, “मुरग के दूसरी दफ़ा बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।” इस पर वह रो पड़ा।

15

पीलातुस के सामने

1 सुबह-सवेरे ही राहनुमा इमाम बुजुर्गों, शरीअत के उलमा और पूरी यहूदी अदालते-आलिया के साथ मिलकर फ़ैसले तक पहुँच गए। वह ईसा को बाँधकर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातुस के हवाले कर दिया।

2 पीलातुस ने उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप खुद कहते हैं।”

3 राहनुमा इमामों ने उस पर बहुत इलज़ाम लगाए।

4 चुनौचे पीलातुस ने दुबारा उससे सवाल किया, “क्या तुम कोई जवाब नहीं दोगे? यह तो तुम पर बहुत-से इलज़ामात लगा रहे हैं।”

5 लेकिन ईसा ने इस पर भी कोई जवाब न दिया, और पीलातुस बड़ा हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

6 उन दिनों यह रिवाज था कि हर साल फ़सह की ईद पर एक कैदी को रिहा कर दिया जाता था। यह कैदी अवाम से मुंतख़ब किया जाता था।

7 उस वक़्त कुछ आदमी जेल में थे जो हुकूमत के खिलाफ़ किसी इंकलाबी तहरीक में शरीक हुए थे और जिन्होंने बगावत के मौके पर क़त्लो-ग़ारत की थी। उनमें से एक का नाम बर-अब्बा था।

8 अब हुज़ूम ने पीलातुस के पास आकर उससे गुज़ारिश की कि वह मामूल के मुताबिक़ एक कैदी को आज़ाद कर दे।

9 पीलातुस ने पूछा, “क्या तुम चाहते हो कि मैं यहूदियों के बादशाह को आज़ाद कर दूँ?”

10 वह जानता था कि राहनुमा इमामों ने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले किया है।

11 लेकिन राहनुमा इमामों ने हुज़ूम को उकसाया कि वह ईसा के बजाए बर-अब्बा को माँगें।

12 पीलातुस ने सवाल किया, “फिर मैं इसके साथ क्या करूँ जिसका नाम तुमने यहूदियों का बादशाह रखा है?”

13 वह चीखे, “उसे मसलूब करें।”

14 पीलातुस ने पूछा, “क्यों? उसने क्या जुर्म किया है?”

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीखते रहे, “उसे मसलूब करें!”

15 चुनाँचे पीलातुस ने हुज़ूम को मुतमइन करने की खातिर बर-अब्बा को आज़ाद कर दिया। उसने ईसा को कोड़े लगाने को कहा, फिर उसे मसलूब करने के लिए फ़ौजियों के हवाले कर दिया।

फ़ौजी ईसा का मज़ाक़ उड़ाते हैं

16 फ़ौजी ईसा को गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियम के सहन में ले गए और पूरी पलटन को इक़ठा किया।

17 उन्होंने उसे अरगवानी रंग का लिबास पहनाया और काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया।

18 फिर वह उसे सलाम करने लगे, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!”

19 लाठी से उसके सर पर मार मारकर वह उस पर थूकते रहे। घुटने टेककर उन्होंने उसे सिज़दा किया।

20 फिर उसका मज़ाक़ उड़ाने से थककर उन्होंने अरगवानी लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए। फिर वह उसे मसलूब करने के लिए बाहर ले गए।

ईसा को मसलूब किया जाता है

21 उस वक़्त लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला एक आदमी बनाम शमौन देहात से शहर को आ रहा था। वह सिकंदर और रूफ़ुस का बाप था। जब वह ईसा और फ़ौजियों के पास से गुज़रने लगा तो फ़ौजियों ने उसे सलीब उठाने पर मजबूर किया।

22 यों चलते चलते वह ईसा को एक मक़ाम पर ले गए जिसका नाम गुलगुता (यानी खोपड़ी का मक़ाम) था।

23 वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें मुर मिलाया गया था, लेकिन उसने पीने से इनकार किया।

24 फिर फ़ौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि किस को क्या क्या मिलेगा उन्होंने कुरा डाला।

25 नौ बजे सुबह का वक़्त था जब उन्होंने उसे मसलूब किया।

26 एक तख्ती सलीब पर लगा दी गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, “यहूदियों का बादशाह।”

27 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ।

28 [यों मुक़द्दस कलाम का वह हवाला पूरा हुआ जिसमें लिखा है, ‘उसे मुजरिमों में शुमार किया गया।’]

29 जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़र बककर उस की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी हिक़ारत का इज़हार किया। उन्होंने कहा, “तूने तो कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा।

30 अब सलीब पर से उतरकर अपने आपको बचा।”

31 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने भी ईसा का मज़ाक़ उड़ाकर कहा, “इसने औरों को बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा सकता।

32 इसराईल का यह बादशाह मसीह अब सलीब पर से उतर आए ताकि हम यह देखकर ईमान लाएँ।” और जिन आदमियों को उसके साथ मसलूब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

ईसा की मौत

33 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही।

34 फिर तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “एली, एली, लमा शबक्रतनी?” जिसका मतलब है, “ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?”

35 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, “वह इलियास नबी को बुला रहा है।”

36 किसी ने दौड़कर मै के सिरके में एक इस्फंज डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की। वह बोला, “आओ हम देखें, शायद इलियास आकर उसे सलीब पर से उतार ले।”

37 लेकिन ईसा ने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

38 उसी वक़्त बैतुल-मुकद्दस के मुकद्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया।

39 जब ईसा के मुक्काबिल खड़े रोमी अफ़सर * ने देखा कि वह किस तरह मरा तो उसने कहा, “यह आदमी वाक़ई अल्लाह का फ़रज़ंद था!”

40 कुछ ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले पर उसका मुशाहदा कर रही थीं। उनमें मरियम मग़दलीनी, छोटे याक़ूब और योसेस की माँ मरियम और सलोमी भी थीं।

41 ग़लील में यह औरतें ईसा के पीछे चलकर इसकी खिदमत करती रही थीं। कई और ख़वातीन भी वहाँ थीं जो उसके साथ यस्ज़ालम आ गई थीं।

ईसा को दफ़न किया जाता है

42 यह सब कुछ जुमे को हुआ जो अगले दिन के सबत के लिए तैयारी का दिन था। जब शाम होने को थी

43 तो अरिमतियाह का एक आदमी बनाम यूसुफ़ हिम्मत करके पीलातुस के पास गया और उससे ईसा की लाश माँगी। (यूसुफ़ यहूदी अदालते-आलिया का नामवर मेंबर था और अल्लाह की बादशाही के आने के इंतज़ार में था।)

44 पीलातुस यह सुनकर हैरान हुआ कि ईसा मर चुका है। उसने रोमी अफ़सर को बुलाकर उससे पूछा कि क्या ईसा वाक़ई मर चुका है?

45 जब अफ़सर ने इसकी तसदीक़ की तो पीलातुस ने यूसुफ़ को लाश दे दी।

* 15:39 सौ सिपाहियों पर मुकर्रर अफ़सर।

46 यूसुफ़ ने कफ़न खरीद लिया, फिर ईसा की लाश उतारकर उसे कतान के कफ़न में लपेटा और एक क़ब्र में रख दिया जो चट्टान में तराशी गई थी। आख़िर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर क़ब्र का मुँह बंद कर दिया।

47 मरियम मगदलीनी और योसेस की माँ मरियम ने देख लिया कि ईसा की लाश कहाँ रखी गई है।

16

ईसा जी उठता है

1 हफ़ते की शाम को जब सबत का दिन गुज़र गया तो मरियम मगदलीनी, याक़ूब की माँ मरियम और सलोमी ने खुशबूदार मसाले खरीद लिए, क्योंकि वह क़ब्र के पास जाकर उन्हें ईसा की लाश पर लगाना चाहती थी।

2 चुनौचे वह इतवार को सुबह-सवेरे ही क़ब्र पर गईं। सूरज तुलू हो रहा था।

3 रास्ते में वह एक दूसरे से पूछने लगीं, “कौन हमारे लिए क़ब्र के मुँह से पत्थर को लुढ़काएगा?”

4 लेकिन जब वहाँ पहुँचीं और नज़र उठाकर क़ब्र पर गौर किया तो देखा कि पत्थर को एक तरफ़ लुढ़काया जा चुका है। यह पत्थर बहुत बड़ा था।

5 वह क़ब्र में दाखिल हुईं। वहाँ एक जवान आदमी नज़र आया जो सफ़ेद लिबास पहने हुए दाईं तरफ़ बैठा था। वह घबरा गईं।

6 उसने कहा, “मत घबराओ। तुम ईसा नासरी को ढूँढ रही हो जो मसलूब हुआ था। वह जी उठा है, वह यहाँ नहीं है। उस जगह को खुद देख लो जहाँ उसे रखा गया था।

7 अब जाओ, उसके शागिर्दों और पतरस को बता दो कि वह तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वहीं तुम उसे देखोगे, जिस तरह उसने तुमको बताया था।”

8 खवातीन लरज़ती और उलझी हुई हालत में क़ब्र से निकलकर भाग गईं। उन्होंने किसी को भी कुछ न बताया, क्योंकि वह निहायत सहमी हुई थीं।

ईसा मरियम मगदलीनी पर जाहिर होता है

9 जब ईसा इतवार को सुबह-सवेरे जी उठा तो पहला शरूख़ जिस पर वह जाहिर हुआ मरियम मगदलीनी थी जिससे उसने सात बदरूहे निकाली थीं।

10 मरियम ईसा के साथियों के पास गईं जो मातम कर रहे और रो रहे थे। उसने उन्हें जो कुछ हुआ था बताया।

11 लेकिन गो उन्होंने सुना कि ईसा जिंदा है और कि मरियम ने उसे देखा है तो भी उन्हें यक्रीन न आया।

ईसा मजीद दो शागिर्दों पर जाहिर होता है

12 इसके बाद ईसा दूसरी सूरत में उनमें से दो पर जाहिर हुआ जब वह यरूशलम से देहात की तरफ पैदल चल रहे थे।

13 दोनों ने वापस जाकर यह बात बाक्री लोगों को बताई। लेकिन उन्हें इनका भी यक्रीन न आया।

ईसा ग्यारह रसूलों पर जाहिर होता है

14 आखिर में ईसा ग्यारह शागिर्दों पर भी जाहिर हुआ। उस वक़्त वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे। उसने उन्हें उनकी बेएतकादी और सख्तदिली के सबब से डाँटा, कि उन्होंने उनका यक्रीन न किया जिन्होंने उसे जिंदा देखा था।

15 फिर उसने उनसे कहा, “पूरी दुनिया में जाकर तमाम मख़लूक़ात को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाओ।

16 जो भी ईमान लाकर बपतिस्मा ले उसे नजात मिलेगी। लेकिन जो ईमान न लाए उसे मुजरिम करार दिया जाएगा।

17 और जहाँ जहाँ लोग ईमान रखेंगे वहाँ यह इलाही निशान जाहिर होंगे : वह मेरे नाम से बदस्ते निकाल देंगे, नई नई ज़बानें बोलेंगे

18 और साँपों को उठाकर महफूज़ रहेंगे। मोहलक ज़हर पीने से उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचेगा और जब वह अपने हाथ मरीज़ों पर रखेंगे तो शफ़ा पाएँगे।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

19 उनसे बात करने के बाद ख़ुदावंद ईसा को आसमान पर उठा लिया गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया।

20 इस पर शागिर्दों ने निकलकर हर जगह मुनादी की। और ख़ुदावंद ने उनकी हिमायत करके इलाही निशानों से कलाम की तसदीक़ की।

किताबे-मुकद्दस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: उर्दू (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2024-09-20

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 1 Jul 2025 from source files dated 20 Sep 2024

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299